सृजन

अंक - 37

हावड़ा मंडल, पूर्व रेलवे

हावड़ा मंडल में वर्तमान पदस्थापित शाखा अधिकारी

मुख्य चिकित्सा अधीक्षक
आर्थोपेडिक अस्पताल, हावड़ा

वरि. मं. परिचालन प्रबंधक
हावड़ा

वरि. मं. सामग्री प्रबंधक
हावड़ा

वरि. मं. यांत्रिक (पर्यावरण एवं गृह रखरखाव प्रबंधन एवं माल भाड़ा), हावड़ा

वरि. मं. इंजीनियर/सम.
हावड़ा

वरि. मं. कार्मिक अधिकारी
हावड़ा

वरि. मं. सुरक्षा आयुक्त/सम.
हावड़ा

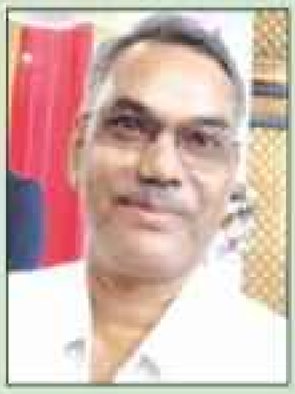

वरि. मं. संरक्षा अधिकारी
हावड़ा

वरि. मं. सिगनल एवं दूरसंचार इंजी.
हावड़ा

वरि. मं. बिजली इंजीनियर/ईएमयू
हावड़ा

वरि. मं. वित्त प्रबंधक
हावड़ा

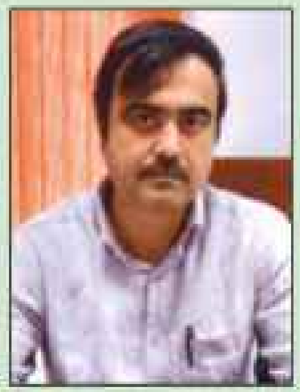

वरि. मं. बिजली इंजी./टीआरएस
हावड़ा

वरि. मं. यांत्रिक इंजी./कोचिंग एवं ट्रेनसेट
हावड़ा

वरि. मं. यांत्रिक इंजीनियर/लोको
हावड़ा

वरि. मं. बिजली इंजीनियर/परि.
हावड़ा

वरि. मं. वाणिज्य प्रबंधक
हावड़ा

वरि. मं. बिजली इंजी./टीआरडी
हावड़ा

वरि. मं. बिजली इंजीनियर/सा.
हावड़ा

शुभकामना संदेश

हावड़ा मंडल, एक हिन्दीतर भाषी क्षेत्र में स्थित होने के बावजूद, राजभाषा हिंदी के प्रयोग और प्रसार में उत्कृष्टता के नए मानदंड स्थापित कर रहा है। कार्यालय में धारा 3(3) के कागजातों सहित ई-फाइलों पर सामान्य टिप्पणी सहित तकनीकी टिप्पणियाँ भी राजभाषा में की जा रही हैं। राजभाषा को कार्यालयीन कार्य में मजबूती प्रदान करने हेतु मंडल ने कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, मासिक शब्द प्रतियोगिता तथा राजभाषा सप्ताह के दौरान आयोजित वाद-विवाद, निबंध लेखन, चित्र देखो कहानी लिखो, श्रुतिलेखन और हिंदी टंकण जैसी प्रतियोगिताएँ न केवल कर्मचारियों को अपनी भाषा के प्रति जागरूक कर रही हैं बल्कि उनमें भागीदारी का नया उत्साह भी उत्पन्न कर रही हैं। इन आयोजनों में कर्मचारियों की सक्रियता और समर्पण से राजभाषा हिंदी को कार्यालयीन स्तर पर और अधिक सशक्त बनाया है।

जीवन में चुनौतियाँ और बाधाएं सफलता का मार्ग प्रशस्त करती हैं। कठिन परिस्थितियाँ हमें परिश्रम और दृढ़ संकल्प की ओर प्रेरित करती हैं। हावड़ा मंडल का हावड़ा स्टेशन हमारी विरासत के साथ-साथ एक व्यस्ततम स्टेशन भी है। प्रतिदिन मेल/एक्सप्रेस, पैसेंजर एवं लोकल गाड़ियों के यात्री जन सैलाब को उचित सेवा प्रदान करने सहित मंडल कार्यालय राजभाषा नीति के संवैधानिक दायित्वों के पालन के प्रति भी सजग है। किसी भी कार्य की शुरुआत में आने वाली परेशानियाँ हमें सीखने और सुधरने का अवसर भी देती हैं।

आज के समय में, जब प्रतिस्पर्धा और आधुनिक तकनीकों का उपयोग तीव्र गति से बढ़ रहा है, हमें अनुशासन, परिश्रम और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए अपने कार्यक्षेत्र में नए आयाम स्थापित करने हैं। राजभाषा हिंदी न केवल हमारे सांस्कृतिक मूल्यों को सुदृढ़ करती है, बल्कि यह हमारे कार्यों को सशक्त और प्रभावी भी बनाती है।

'सृजन' पत्रिका के इस विशेष संस्करण के माध्यम से मैं आप सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से यह विशेष आग्रह करता हूँ कि आप सभी पत्रिका के सतत् प्रकाशन हेतु अपने विभागों की उपलब्धियों एवं उत्कृष्ट रचनाओं सहित हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करें और इसे अपने कार्य का अभिन्न हिस्सा बनाएं। आपके प्रयास न केवल संगठन को ऊँचाइयों तक पहुँचाने में सहायक होंगे बल्कि हिंदी भाषा को भी व्यापक पहचान और महत्व प्रदान करेंगे।

वर्ष 2025 में हावड़ा मंडल के 100वीं वर्षगांठ के अवसर पर राजभाषा विभाग की 'सृजन' पत्रिका के 37वें अंक का प्रकाशन कर अपार हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ।

(संजीव कुमार)
मंडल रेल प्रबंधक
हावड़ा मंडल

शुभकामना संदेश

हावड़ा मंडल की राजभाषा ई-पत्रिका 'सृजन' के 37वें अंक का प्रकाशन अत्यंत प्रसन्नता का विषय है। पत्रिका का मूल उद्देश्य केवल इसका प्रकाशन ही नहीं अपितु रचनाकार रेलकर्मियों एवं उनके आश्रितों की प्रतिभा को उजागर करने का जरिया भी है।

हावड़ा मंडल 'ग' क्षेत्र में स्थित होने के बावजूद राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु निरंतर प्रयासरत है। इस मंडल का क्षेत्र काफी व्यापक है तथा इसके अधिकांश कर्मचारी रेल परिचालन से जुड़े हैं। गाड़ियों की संरक्षा हेतु परिचालनिक कर्मचारियों का स्टेशन छोड़ना संभव नहीं हो पाता है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु मंडल कार्यालय के अतिरिक्त कार्यरत कर्मचारियों को राजभाषा की कड़ी से जोड़ने हेतु विभिन्न स्टेशनों पर भी राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, हिंदी कार्यशाला एवं हिंदी निबंध जैसे प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया तथा हमारे रेल कर्मियों ने इसमें सहर्ष अपनी भागीदारी निभाई।

यह बताते हुए मैं अपार हर्ष का अनुभव कर रहा हूं कि पूर्व की भाँति दिनांक 20.09.2024 को आयोजित क्षेत्रीय रेल हिंदी नाट्योत्सव के दौरान हावड़ा मंडल द्वारा मंचित नाटक 'अपराधी कौन?' को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

पत्रिका में अपनी उत्कृष्ट रचनाएँ देकर आप सभी ने न केवल पत्रिका के प्रकाशन में अपनी अहम भूमिका निभाई है बल्कि अपनी लेखनी को गति देकर पत्रिका की गरिमा को भी बढ़ाया है। आप सभी सदैव इसी प्रकार ज्ञानपरक एवं रुचिकर रचनाएं राजभाषा विभाग/ हावड़ा को प्रेषित करते रहें ताकि आगे भी निर्बाध गति से पत्रिका का प्रकाशन होता रहे। पत्रिका की गरिमा एवं इसकी उपयोगिता को बढ़ाने हेतु राजभाषा प्रश्नोत्तरी, फाइलों पर टिप्पणी में काम आने वाले वाक्यांशों सहित राजभाषा प्रोत्साहन पुरस्कार योजना को भी शामिल किया गया है।

अंत में राजभाषा विभाग को पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना के साथ इसके प्रकाशन में योगदान देने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को शुभकामनाएं देता हूं।

(उदय कुमार केशरी)
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं
अपर मंडल रेल प्रबंधक (प्रशा.)/हावड़ा

शुभकामना संदेश

राजभाषा में पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन का उद्देश्य हिंदी के प्रति अधिकारियों एवं कर्मचारियों में छुपी उनकी प्रतिभा, रुचि एवं आत्मविश्वास को जगाना है। इस क्रम में हावड़ा मंडल की गृह पत्रिका 'सृजन' का नियमित प्रकाशन राजभाषा के व्यापक प्रचार-प्रसार के साथ ही साथ कार्यालय में हिंदी में कार्य करने का एक माहौल तैयार करने में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

वर्ष 2024 में कर्मचारियों के बीच हिंदी में कार्य करने के प्रति रूझान बढ़ाने एवं उनकी झिझक को दूर करने हेतु मंडल कार्यालय सहित विभिन्न स्टेशनों में हिंदी कार्यशालाओं, हिंदी कुंजीयन प्रशिक्षण एवं विविध राजभाषा प्रतियोगिताएं (प्रश्नोत्तरी, निबंध आदि) का आयोजन किया गया तथा उन उपलब्धियों को भी हावड़ा मंडल की इस 'सृजन' पत्रिका के 37वें अंक में कहानी, कविता के अतिरिक्त प्रस्तुत किया गया है।

मुझे विश्वास है कि हावड़ा मंडल राजभाषा विभाग की यह गृह पत्रिका 'सृजन' अपने नाम के अनुसार ही सभी में लेखन क्षमता का निरंतर सृजन करता रहेगा। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु राजभाषा अनुभाग के संपादक एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई देता हूं और भविष्य में उत्कृष्ट रचनाओं सहित इसका अनवरत प्रकाशन होता रहे, इसकी कामना करता हूं।

सौरिश मुखर्जी

(सौरिश मुखर्जी)
अपर मंडल रेल प्रबंधक (परि.)
हावड़ा

संपादकीय

प्रभारी राजभाषा अधिकारी का कार्यभार संभालने के बाद सृजन पत्रिका के 37वें अंक का प्रकाशन करते हुए मुझे अति प्रसन्नता हो रही है। अपने विभाग से इतर दूसरे विभाग की जिम्मेवारियों को सम्हालना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था किन्तु ज्यों-ज्यों कार्य की गहराई तक पहुँचा कार्य स्वतः ही सहज होते चले गए। हावड़ा मंडल की 'सृजन' पत्रिका के कलेवर को हर तरह से परख कर आप सभी के समक्ष एक पत्रिका के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

पत्रिका केवल कहानी, कविता का ही संकलन न हो, इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए दैनिक कार्यों में फाइलों पर टिप्पणी में काम आने वाले वाक्यांशों सहित, राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर आयोजित की गई प्रतियोगिताओं को भी उपलब्धि के रूप में प्रकाशित किया गया है। ये उपलब्धियां सामान्य राजभाषा विभाग की गतिविधियों सहित कार्यरत कर्मचारियों के बीच एक सूचना भी प्रस्तुत करे, इसका भी ख्याल रखा गया है।

हावड़ा मंडल के कार्यालय, कारशेड एवं विभिन्न स्टेशनों से कर्मचारियों द्वारा प्राप्त रचनाओं ने कर्मचारियों की प्रतिभा को प्रस्फुटित किया है। आशा है 'सृजन' पत्रिका का यह अंक आपको पसंद आएगा। हम आगामी अंक में आपके बहुमूल्य सुझावों एवं लेखों का हार्दिक स्वागत करेंगे।

अभिषेक कुमार

(अभिषेक कुमार)
प्रभारी राजभाषा अधिकारी
एवं
सहायक मंडल सामग्री प्रबंधक
पूर्व रेलवे, हावड़ा

सृजन

अंक - 37 वाँ

संरक्षकगण

संजीव कुमार
मंडल रेल प्रबंधक
पूर्व रेलवे, हावड़ा

उदय कुमार केशरी
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
अपर मंडल रेल प्रबंधक (प्रशा.)
पूर्व रेलवे, हावड़ा

संपादक

अभिषेक कुमार
प्रभारी राजभाषा अधिकारी एवं
सहायक मंडल सामग्री प्रबंधक/हावड़ा

सहयोगी

सालुका लागुरी,
आरती कुमारी मिश्रा, सुभाष प्रसाद
बिकाश कुमार साव, सुमित सिंह

संपर्क सूत्र : राजभाषा कक्ष,
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय,
पूर्व रेलवे, हावड़ा

नि:शुल्क वितरण

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखक/रचनाकार के अपने हैं। इसके लिए संपादक मंडल किसी भी प्रकार से जिम्मेवार नहीं होगा।

राजभाषा अधिकारी पूर्व रेलवे, हावड़ा द्वारा प्रकाशित
कंप्यूटर-एन-मीडिया द्वारा मुद्रित

अनुक्रम

क्र. सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृ.सं.
1.	स्टेशन मास्टर	दिनेश कुमार	6
2.	रेल का सिपाही	कुमार विकास	7
3.	एक घाट की आत्मकथा	अजंता साहा	8
4.	मेरे प्यारे पापा	पिन्टू गुप्ता रौनियार	9
5.	लोकतंत्र का खोया हुआ चेहरा	दीप्ति रॉय	9
6.	भारतीय रेलवे में 'रेलवे सुरक्षा बल'	एस. कामेश्वर राव	10
7.	राष्ट्र निर्माण में युवाओं का योगदान	सूरज कुमार	11
8.	कैंसर (कर्क रोग) का संक्षिप्त परिचय	डॉ वेंकटेश्वर पाण्डेय	12
9.	पिकनिक का उल्लास	राजेश कुमार रंजन	14
10.	नारी स्वाभिमान	आशुतोष श्रीवास्तव	15
11.	समय की बात मनुष्य के साथ	राकेश रोशन	15
12.	दादा जी	कामेश्वर पांडेय	16
13.	मेरा गांव अब उदास रहता है.../ एक वो दौर था, एक ये दौर है।	पूर्णेन्दु शेखर सिन्हा	18
14.	प्रदूषण मुक्त त्योहार स्वच्छ भारत की पहल	रोहन पटेल	19
15.	उड़ान / वक्त	रवि कुमार यादव	21
16.	हिंदी प्रचार-प्रसार	जय प्रकाश प्रसाद	22
17.	टैरेस गार्डन	विकास कुमार साव	23
18.	अप्रैल फूल	अरूपम माइति	24
19.	चिनाब रेलवे ब्रिज - भारतीय रेलवे का उत्कर्ष	अंकिता साव	26
20.	जीवन : एक परिचय	रविकांत चौधरी	28
21.	समय का मूल्य	ज्ञान देवी नेगी	30
22.	रेलवे की भूमिका	अनुराग कुमार	31
23.	राजभाषा विषय पर विभागीय परीक्षा-उपयोगी प्रश्नोत्तर		32
24.	भारतीय रेल की हिंदी प्रोत्साहन एवं पुरस्कार योजनाएं		34
25.	फाइलों पर टिप्पणी में काम आने वाले वाक्यांश		39

स्टेशन मास्टर

दिनेश कुमार
तकनीशियन-I
ईएमयू कारशेड, हावड़ा

रतन अपने परिवार का होनहार व होशियार लड़का था। उसका सपना था अपने दादा जी की तरह सरकारी नौकरी करने का। रतन के दादा जी रेलवे में स्टेशन मास्टर थे इसलिए उनका अधिकांश समय शहरों में बिता था। जब कभी भी वे छुट्टी में गांव आते तो गांव के चौपाल में उनकी खूब स्वागत व प्रशंसा होती। रतन जब कभी अपने दादा जी के साथ गांव के चौपाल में जाते तो वहां पे बैठे बुजूर्ग, ताऊ कहते लो आज तो मास्टर जी का पोता भी साथ आया है। इससे रतन को बहुत खुशी होती और मन ही मन सोचता कि मैं भी एक दिन पढ़-लिख कर सरकारी नौकरी करूंगा। रतन अपने माता-पिता और एक छोटी बहन के साथ गांव में रहता है। उनके पिता गांव में खेती बाड़ी का कार्य करते थे। रतन और उसकी छोटी बहन गांव के ही स्कूल में पढ़ाई-लिखाई करते थे। दोनों ही अपनी स्कूल कक्षा में अव्वल रहते थे। रतन को बचपन से ही पढ़ाई के साथ-साथ ट्रेन परिचालन को समझने और जानने की कौतूहल रहती थी। ट्रेन क्या है, कैसे काम करती है, कौन इसे चलाता है? और भी बहुत सारे सवाल। पर इन सभी सवालों को जानने और समझने में महीनों की प्रतीक्षा करनी पड़ती थी क्योंकि इन सभी सवालों का जवाब दादा जी के गांव आने के बाद ही मिल पाता था। रतन इन सवालों को जानने की कोशिश कई बार अपने विद्यालय के प्राचार्य और शिक्षकों से भी कर चुका था, किन्तु वह उनके उत्तरों से संतुष्ट नहीं था, क्योंकि सभी शिक्षक ट्रेन परिचालन के बारे में गहराई से प्रकाश डालने में असमर्थ रहते थे। किन्तु रतन अब बहुत खुश था, क्योंकि कल रात को ही पिता जी से कहते सुना था, दादा जी इसी महीने के अंतिम तारीख को सेवा-निवृत्ति होने वाले हैं। अब वे गांव में ही हम सब के साथ रहेगें। रतन खुशी से अब फुले न समा रहा था। वह सोच रहा था अब मुझे उन सभी सवालों का जवाब शीघ्र मिल जायेगी जिसका मुझे बेसब्री से इंतजार था। महीने के अंतिम तारीख आने में अभी भी सात दिन बाकी था। किन्तु रतन के लिए वह सात दिन मानो वर्षों के समान था। जैसे-जैसे दिन बीतता जाता उसकी बैचेनी और दोगुनी हो जाती, पर उसे खुशी और उत्साह भी होता, चलो एक दिन तो बीता। आखिरकार वो तारीख भी आ गई थी, जिसका उसे बेसब्री से इंतजार था। उस दिन रविवार (छुट्टी) का दिन था। रतन उस सुबह जल्दी उठकर दैनिक नित्यकर्म (शौचादि) से निवृत्त होकर, नया कुर्ता-पायजामा पहनकर मां के पास गया और कहा मां मुझे जल्दी से नास्ता दे दो मुझे किसी से मिलने जाना है। मां पूछती है, कौन है? और कहां मिलने जाना है? इस पर रतन कहता, मैं अभी इन सब सवालों का जवाब नहीं दे सकता। पहले तुम मुझे नास्ता दे दो, फिर आकर बताता हूं। मां से नास्ता की थाली लेकर वह जल्दी-जल्दी से नास्ता करने लगता, नास्ता जल्दी करने की हड़बड़ाहट में वह कई बार हिचकी लेने लगता। इस पर मां पानी की ग्लास आगे बढ़ाते हुए कहती इतनी जल्दबाजी किस चीज की है? रतन मां की तरफ एक नजर उठाकर देखता, फिर से वहीं जवाब देता। मां कहा ना आकर बताता हूं। नास्ता करने के बाद, वह दौड़कर गांव की चौपाल (जो मुख्य सड़क की ओर था) जाकर वहां पर रखे एक मेज पर बैठकर मुख्य सड़क की ओर नजर लगाकर इंतजार करने लगता है। सुबह से शाम हो जाने के बाद भी जब दादाजी को ना आते देखा तो, थककर वापस घर आकर मायूस होकर बैठ जाता है। पिताजी ने रतन को उदास देखा, तो उससे पूछे क्या बात है? आज तुम उदास लग रहे हो? रतन बोलता है पिताजी आज तो दादाजी आने वाले थे? फिर अभी तक क्यों नहीं आए? पिताजी मुस्कुराए और कहा बेटा दादाजी तो दोपहर में ही आ गए थे। वहां देखो बरामदे में बैठे हुए है। रतन जब नजर घुमाकर बरामदे की तरह देखा तो सच में, वे बैठे हुए थे। यह देखकर रतन का खुशी का ठिकाना ना था। वह

दौड़कर दादाजी के पास जाकर पैर छूकर प्रणाम किया और गले लगकर एक-दूसरे से वात्सल्य प्रेम करने लगे। अब रतन की आँखों में कुछ अलग ही चमक था। मन हर्षित और उल्लासपूर्ण से अभिभूत था। दादाजी को रतन की आँखो में साफ एक चमक दिखाई दे रही थी। दादा जी थोड़ा शरारती अंदाज में इस बार पूछ बैठे रतन से, हां! तो 'बरखुरदार' के दिमाग में क्या चल रहा है? क्या-क्या सवाल है? लगता है इस बार तुम्हारे सवालों का जवाब देते-देते कहीं मैं थक ना जाऊँ। इस पर रतन थोड़ा शर्माते हुए कहता है दादाजी आप भी.... इस तरह शाम से रात हो जाती दोनों दादा-पोता का सवाल-जवाब करते-करते। फिर अचानक घर के अंदर से मां के बुलाने की आवाज आती है, बेटा दादाजी को अब आराम करने दो वे थक गए होगें यात्रा करके। बाकी का सवाल कल कर लेना। रतन वापस अपने कमरे में दादाजी को शुभ रात्रि कह के चला जाता है। अब वह संतुष्ट था अपने सवालों का उत्तर पाकर। और मन ही मन सोचता, मैं भी एक दिन बड़ा होकर स्टेशन मास्टर बनूँगा।

रेल का सिपाही

कुमार विकास
स्टेशन मास्टर, पाकुड़

रेल का सिपाही देता हूँ रफ्तार रेल को,
केबिन में तैनात हूँ मैं,
पहन के सफेद वर्दी
हमेशा रहता तैनात मैं,
सर हमेशा दस फोन का
वजन लेकर चलता हूँ
हो सर्दी या गर्मी दिन भर
लथपथ रहना पसीने में
वीरान रात में अकेले ड्यूटी देता
डर को छुपा कर सीने में,
खाता हूँ दो रोटी मगर
वह भी चैन से ना खा पाता हूँ।
होता हूँ जब फुर्सत में
रेल के गीत गुनगुनाता हूँ।
धड़क रही रेल दिलों में
रेल का सेवादार हूँ मैं
रेल से पहचान हमारी
रेल का पहरेदार स्टेशन मास्टर हूँ मैं।

एक घाट की आत्मकथा

अजंता साहा
लेखा सहायक, स्थापना
पूर्व रेलवे

मैं एक टूटी हुई घाट हूं। किनारा से बेखबर। ज्वार-भाटा के साथ मेरा जीना-मरना, जगना-डुबना। परन्तु एक समय था जब मैं एक सम्पूर्ण सोपान थी। पहाड़ और पानी के बीच मैं ही योगसूत्र थी। हमेशा ही यहां चहल-पहल, शोरगूल लगा रहता था।

बच्चों के झुंड पानी में उछल-कूद करते थे। छलांग लगाकर पानी के अन्दर डुबकी लगाते थे। फिर तैर कर सीढ़ी से चढ़कर मस्ती करते थे। दिनभर उनके कोलाहल, शोरगुल गुंजती रहती थी। यह बचपना और नटखटपन मुझे बहुत ही आनन्द देता था।

गांव की औरते नहाने के बाद कलशी में पानी भर कर घर की ओर जाती थी। उनलोगों की कंगन की खनखनाहट और पायल की छन्छन् संगीत की तरह बजती थी।

बर्तन मलते वक्त संसार की सुख-दुःख की कहानियां एक दूसरे को बताती थी। उनलोगों का दुखड़ा सुन कर मैं भी दुखी हो जाती थी। बाबुल का घर छोड़ कर शादी के बाद पिया के घर आ जाती है। वहां किस तरह संतुलन बना कर दिन बिताना पड़ता है---यह सोच कर मैं हैरान हो जाती हूं।

गांव के कृषक भाईलोग क्षेत्र की पकी हुई फसल लेकर नाव से दूसरे गाँव व हाट में व्यापार करने जाते थे और पसरा खाली कर के मेरे सोपान में आकर नाव भीड़ाते थे और हँसमुख अपने-अपने घर लौटते थे। लाभ के पैसे गिनते थे। तब उनके सफलता से मैं भी बहुत खुश हो जाती थी।

कभी कोई नई-नवेली दुल्हन लेकर बड़े-बड़े ढोल-नगाड़े के साथ मेरे किनारे में आकर लगता था। शंख और हलुध्वनि से वातावरण गुंज उठता था। उनकी सजी हुई सलाज चेहरा खुशी से झलकता था।

कभी कोई बदनसीब औरत अपने पति की मौत के बाद मांग की सिंदूर मिटाने के लिए मेरे सोपान पर आकर बैठती थी। उनके रोने की आवाज़ और हाहाकार से मेरी अन्तरत्मा कांप उठती थी।

जब बेटा अपने मां या बाप को मिट्टी देने के बाद मेरे सीढ़ी पर आकर नहाने के बाद मन्त्रोच्चारण करके सफेद वस्त्र धारण करता था, तब उनके अकेलेपन और बेसहारापन का मैं भी हिस्सा बन जाती थी।

दिन बीतती जा रही थी। एक दिन पानी की तीव्र बहाव से मैं टूट पड़ी। किनारा से मेरा संजोग छिन्न हो गया। मैं हो गयी एकाकी, विछिन्न, छिन्नमूल।

कभी-कभी एक अकेला नाविक मेरे टूटे हुये सीढ़ी पर आकर नाव भीड़ाता है। कभी एक संगीतहीन बगुला या एकाकी नीलकंठ शिकार की आस में घंटों बैठा रहता है। समय होने पर उड़ जाता अपने आशियाना में।

यह अलबेले दोस्त मेरे निःसंग जीवन में कुछ देर के लिए ही सही, साथी बन जाते हैं।

गरजते बादल मुझे बुलाते हैं, बिजली की चमक मुझे दुनिया दिखाती है, तूफान की सनसनाहट मेरे अन्तर को छू जाता है, बारिश का स्पर्श हमें मुहब्बत का एहशास देती है।

मुझे, भी लगता है, काश मैं उड़ पाती। मेरा भी पंख होता। उड़के मैं चली जाती अपने कोई आशियाना में।

मैं जिंदा होकर बचती।

मैं भी जी जाती।

वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

- मैथिलीशरण गुप्त

मेरे प्यारे पापा

पिन्टू गुप्ता रौनियार
लेखा सहायक
वरिष्ठ मंडल वित प्रबंधक, कार्यालय

पापा हर फर्ज निभाते हैं
जीवन भर कर्ज चुकाते हैं
बच्चे की एक खुशी के लिए
अपने सुख भूल ही जाते हैं
फिर क्यों ऐसे पापा के लिए
बच्चे कुछ कर भी नहीं पाते
ऐसे सच्चे पापा को क्यों
पापा कहने में भी सकुचाते हैं
पापा का आशीष बनाता है
बच्चे का जीवन सुखदाई
पर बच्चे भूल ही जाते हैं
यह कैसी आँधी है आई
जिससे सब कुछ पाया है
जिसने सब कुछ सिखलाया है
कोटि नमन ऐसे पापा को
जिन्होंने हर पल साथ निभाया है
प्यारे पापा के प्यार भरे
सीने से जो लग जाते हैं
सच कहता हूँ विश्वास करो
जीवन में सदा सुख पाते हैं।

लोकतंत्र का खोया हुआ चेहरा

दीप्ति रॉय
पत्नी-कार्तिक महतो
सामान्य सहायक
राजभाषा अनुभाग, हावड़ा

हर क्षण
हर पल
मेरे इर्द गिर्द
या मेरे भीतर
जो मुझे पुकारता है
भीतर तक कचोटता है
मैं जानना चाहता हूँ
आखिर तुम हो कौन?
मेरे इस प्रश्न पर
हर वक्त
मेरे हृदय की बंद धड़कन
स्पंदित हो उठती है
और ढूंढ़ती है उस चेहरे को
जो अब तक है
कुछ अनकहा-सा
धूंधला-सा
मेरे दोस्तों वह नम चेहरा
रूदन छोड़
कब हँसेगा, कब मुस्कुरायेगा?

भारतीय रेलवे में 'रेलवे सुरक्षा बल'

एस. कामेश्वर राव
सहायक उप निरीक्षक,रे.सु.ब./हावड़ा

देश की अर्थव्यवस्था में रेलवे का बड़ा योगदान रहा है, यह इसलिए हुई कि रेलवे की निजी समान की सुरक्षा, एक स्थान से दुसरे स्थान तक सुरक्षा से पहुँचाना और रेलवे में यात्रा कर रहे यात्रियों की सुरक्षा एक बड़ा दायित्व रेलवे सुरक्षा बल के द्वारा की जाती है।

रेलवे सुरक्षा बल एक ऐसा बल है जिसकी स्थापना 20 सितम्बर 1985 को की गई। रेलवे सुरक्षा बल देश के सर्वोत्तम सुरक्षा बलों में से एक है। यह एक ऐसा सुरक्षा बल है जो देश में रेल यात्रियों की सुरक्षा, भारतीय रेलवे की संपत्तियों की रक्षा और देश विरोधी गतिविधियाँ जो रेलवे को हानि पहुँचाने की दृष्टि रखता उसके सुरक्षा हेतु निगरानी रखता है।

यह एक केन्द्रीय सैन्य सुरक्षा बल है जो पैरा मिलिट्री फोर्स के रूप में भी जाना जाता है। जिससे दोषियों के गिरफ्तार करने जाँच-पड़ताल करने एवं अपराधियों के विरूद्ध मुकदमा चलाने का अधिकार होता है। यह प्रायः आर. पी. एफ के नाम से जाना जाता है। यह सुरक्षा बल रेल मंत्रालय के अधीन होता है।

रेलवे सुरक्षा बल यात्रियों, रेलवे सम्पत्तियों की सुरक्षा के साथ-साथ रेलवे क्षेत्र के अनाथ बच्चों को भी सहायता प्रदान करता है और उनके पुनःस्थापना की भी व्यवस्था करता है। इतना ही नहीं भारतीय रेलवे की क्षमता एवं छवि को बनाने का भी आवश्यकतानुसार सहायता करता है। यह अपराधियों को पकड़ने में स्थानीय पुलिस की भी मदद करता है।

एक प्रकार से रेलवे सुरक्षा बल रेलवे विभाग एवं स्थानीय पुलिस तथा जनता के मध्य एक सेतु का कार्य करता है।

रेलवे सुरक्षा में रेलवे सम्पत्तियों की सुरक्षा हेतु अपराधियों को पकड़ने के लिए इसे बिना वारेन्ट का गिरफ्तार करने का अधिकार भी दिया गया है। रेलवे सुरक्षा बल के कर्तव्य में मुख्यतः यात्रियों की सुरक्षा को ज्यादा केंद्रित किया गया है।

जैसे कोई यात्री स्टेशन पर बैठा हुआ है या वह ट्रेन में यात्रा कर रहा है। आचानक उस यात्री का समान चोरी हो गया या उस यात्री से कोई छेड़छाड़ कर रहा होता है। ऐसी गतिविधियों पर यात्री नजदीक पर ड्युटी में तैनात रेलवे सुरक्षा बल के जवान से संपर्क कर सकता है और अपने मोबाइल के जरिये 139 में कॉल कर रेल मदद भी ले सकता है। साथ ही साथ ट्विटर के जरिये अपना शिकायत कर सकता है।

रेलवे सुरक्षा बल रेल मदद या ट्विटर शिकायत प्राप्त होने पर उस यात्री से तुरंत संपर्क करता है और पुरा विवरण लेकर नजदीक रेलवे सुरक्षा बल के यहाँ या ट्रेन में चलित ट्रेन स्काउट को भी सुचना देकर यात्री की शिकायत को दूर करता है।

इसके अलावा रेलवे सुरक्षा बल में मेरी सहेली के नाम से एक टीम का गठन है जिसका कर्त्तव्य है कि जो भी यात्री (महिला अकेली यात्री) यात्रा कर रही हो उससे एक महिला जवान संपर्क कर उसकी यात्रा के दौरान सुरक्षा का दायित्व लेती है।

अतः अंत में यह कहना चाहता हूँ कि रेलवे सुरक्षा बल के जवान (पुरुष या महिला) जो अपने घर से बहुत दूर रह कर रेलवे में जनता की सुरक्षा करते रहते हैं और देश की सबसे बड़ी प्राथमिकता "महिला के विरूद्ध अपराध को रोकने", रेलवे परिसर में लगातार संघर्ष करते चले आ रहा हैं जो देश की आंतरिक सुरक्षा का अंग है। उन जवानों की मनोबल को बढ़ाते रहे ताकि और अच्छी तरह सफलता प्राप्त कर सकें।

धन्यवाद

राष्ट्र निर्माण में युवाओं का योगदान

सूरज कुमार
कनिष्ठ लिपिक
वाणिज्य/हावड़ा

युवक हमारे देश के कर्णधार होते हैं। देश और समाज का भविष्य उन्हीं पर निर्भर होता है। परन्तु आज हमारे देश की दशा अत्यंत विचारणीय है। समाज में एकता, जागरूकता, राष्ट्रीय चेतना, कर्तव्य बोध, नैतिकता आदि की कमी है। युवा पीढ़ी हमारे देश की प्रगति और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं क्योंकि वे देश की कुल आबादी के अधिकांश हिस्सा (28 प्रतिशत) का गठन करते हैं। युवाओं को ईमानदार और मेहनती होना चाहिए क्योंकि किसी भी राष्ट्र की उन्नति और प्रगति के लिए युवाओं द्वारा ईमानदारी के सिद्धांतों को अपनाया जाना चाहिए साथ में समाज में चल रही कुरीतियों को दूर करना चाहिए।

युवा महत्वपूर्ण है क्योंकि वे हमारे भविष्य होंगे आज वे हमारे साथी हो सकते हैं कल वे नेता, अभिनेता, डॉक्टर, इंजीनियर आदि बनेंगे। युवा बहुत ऊर्जावान और उत्साही होते हैं उनमें सीखने और पर्यावरण के अनुकूल कार्य करने की क्षमता अधिक होती है इसी तरह वे अपने लक्ष्यों को करने के लिए सीखने और उस पर काम करने के लिए भी तैयार रहते हैं।

हम किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते हैं चाहे वह तकनीकी क्षेत्र हो या खेल का क्षेत्र युवाओं की आवश्यकता होती है। यह हम पर निर्भर करता है कि हम युवाओं को यह भूमिका सही ढ़ग से निभाने में कैसे मदद करें। हमें सभी युवाओं को उनकी शक्ति और राष्ट्र निर्माण में उनकी भूमिका के बारे में जागरूक करना चाहिए। ऐसे कई तरीके हैं जिनसे हम अपने देश के युवाओं को उनकी क्षमता हासिल करने में मदद कर सकते हैं। इसके लिए युवाओं को सरकार की ओर से शुरू की गयी योजनाओं में जोड़ना चाहिए और ऐसे जागरूकता कार्यक्रम शुरू करने चाहिये जो स्वच्छता, बेरोजगारी, खराब शिक्षा, खेल संस्थान, और अन्य मुद्दों से लड़ने में मदद मिल सके और वे बिना किसी बाधा के हर तरह से समृद्ध हो सके।

हमारे युवा समाज में सामाजिक सुधार ला सकते हैं हम देश के युवाओं के बिना काम नहीं चला सकते। इसके अलावा राष्ट्र के लक्ष्यों को प्राप्त करने और देश की प्रगति की ओर ले जाने में उनकी भागीदारी की आवश्यकता है। इसी तरह नागरिकों को हमारे युवाओं के लिए हर क्षेत्र में बेहतर करने के लिए प्रोत्साहित करना सुनिश्चित करना चाहिए। जब हम अपने युवाओं को लगातार हतोत्साहित करते हैं और उन पर विश्वास नहीं करते हैं तो वे अपनी चमक खो देते हैं। हम सभी को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके पंखों में जंजीर बांधकर उन्हें नीचे लाने के बजाय ऊंची उड़ान भरने के लिए हवा दी जाय।

इसके अलावा जाति, पथ, लिंग, नस्ल, धर्म और अन्य बातों में सभी के लिए समान अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। भाई भतीजावाद और पक्षपात के कई मुद्दे हैं जो देश की वास्तविक प्रतिभा खो दे रहे हैं। इसे जल्द खत्म कर देना चाहिए। आजकल सोशल मीडिया का अनावश्यक उपयोग युवाओं का कीमती समय नष्ट कर दे रही है और उनकी सफलता के मार्ग को दुर ले जा रही हैं। इसके लिए सरकार को सोशल मीडिया का उपयोग उनकी उम्र के अनुसार कर देना चाहिए और इसके सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव के बारे में जागरूक करना चाहिए।

संक्षेप में, हमारे युवा हमारे राष्ट्र निर्माण की शक्ति है, इसलिए हमें उन्हें अवसर देना चाहिए वे भविष्य है और उनके पास दृष्टिकोण है नई सोच है, नई ऊर्जा है, जो पुराने पीढ़ियों में नहीं है। राष्ट्र को समृद्ध बनाने के लिए उनके जोश और उत्साह को सही दिशा में निर्देशित करना चाहिए।

कैंसर (कर्क रोग) का संक्षिप्त परिचय

डॉ वेंकटेश्वर पाण्डेय
अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी
ऑर्थोपेडिक अस्पताल, हावड़ा

कैंसर के कारण विश्व में 2020 में करीब 1 करोड़ मृत्यु हुई। स्तन, फेफड़ा, आंत, गर्भाशय ग्रीवा (Cervix), प्रोस्टेट ग्रन्थि (Prostate Gland) में कैंसर होने की संख्या ज्यादा है। वैसे शरीर का कोई भी अंग कैंसर से प्रभावित हो सकता है। समाज में कैंसर के प्रति लोगों की जागरूकता बढ़े इसलिए विश्व स्तर पर कैंसर से संबंधित कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। प्रतिवर्ष 04 फरवरी को विश्व कैंसर दिवस (World Cancer Day) मनाया जाता है। 2022-2024 का थीम (मुख्य विचार) है Close The Care Gap (देखभाल की दूरी को कम करें)। इसका उद्देश्य स्वास्थ्य सेवाओं को हर व्यक्ति तक समान रूप से उपलब्ध कराना है। Breast Cancer Awareness Month (स्तन कैंसर जागरूकता माह) प्रतिवर्ष अक्टूबर में मनाया जाता है। वर्ष 2024 का थीम है- No One Should Face Breast Cancer Alone (कोई भी स्तन कैंसर का सामना अकेले न करे)। National Cancer Awareness Day (राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस) प्रतिवर्ष भारत में 07 नवंबर को मनाया जाता है।

कैंसर :

मूल रूप से, कैंसर असामान्य कोशिकाओं की अनियंत्रित वृद्धि है जो आसपास के ऊतकों में प्रवेश कर सकती है और उन्हें नुकसान पहुंचा सकती है। यह अनियंत्रित वृद्धि अक्सर ट्यूमर का निर्माण करती है, जो या तो Benign या Malignant हो सकते हैं।

कैंसर के लक्षण :

अस्वाभाविक थकान

भूख में कमी

रात का पसीना

लगातार दर्द, हड्डियों में दर्द

त्वचा में बदलाव, जैसे कि मस्से का आकार बदलना या नए मस्से आना

वजन में अचानक कमी

मुंह में छाले होना जो लंबे समय से ठीक न हों

सांस लेने में दिक्कत

बुखार, खासकर रात में

बोलने या निगलने में दिक्कत

खांसी या मुंह से खून आना

मासिक धर्म के बीच, सहवास के बाद या रजोनिवृत्ति के बाद योनि से रक्तश्राव

मूत्र में रक्त आना

स्तन या अन्य जगह गांठ का होना या बढ़ना

कैंसर की जांच :

1) Cancer Screening Test - कैंसर Screening Test का उद्देश्य कैंसर की पहचान कैंसर की लक्षण उत्पन्न होने के पहले हो जाए। प्रारम्भिक अवस्था मे कैंसर की पहचान होने से कैंसर का इलाज आसान होता है और कैंसर के सम्पूर्ण निर्मूलन की संभावना अधिक रहती हैं।

क) महिलाओं में Mammography करने की सलाह दी जाती है! जिससे स्तन कैंसर का पता लग सके!

ख) महिलाओं में Cervical Pap Smear से गर्भाशय ग्रीवा कैंसर (Cancer of Cervix) का पता लगता है।

ग) पुरुषों में PSA की जांच से प्रोस्टेट कैंसर का पता लग सकता है।

2) अन्य जांच :

FNAC, Biopsy, USG, CT-SCAN, MRI, PET-SCAN इत्यादि।

3) चिकित्सा : कैंसर के प्रकार और अवस्था के अनुरूप निम्नलिखित उपचार है।

Surgery
Chemotherapy
Radiotherapy

उपचार प्रक्रिया के दौरान रोगियों और उनके परिवारों के लिए भावनात्मक और मनोवेज्ञानिक समर्थन आवश्यक है।

कैंसर से बचाव :

करीब 30-50 प्रतिशत कैंसर को होने से रोका जा सकता है। बचाव चिकित्सा का उत्तम उपाय है। यदि समाज को कैंसर के कारकों के बारे में सचेत किया जाय और इन कारकों से उन्हें बचाया जाय तो कैंसर में कमी लाई जा सकती है। स्वस्थ जीवन शैली और उचित जानकारी की जरूरत है। कैंसर के प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं-

तम्बाकू (धूम्रपान, खैनी) - तम्बाकू में 7,000 रसायन हैं, 250 हानिकारक हैं और 69 कैंसर के कारक हैं। विश्व में तम्बाकू सेवन की कारण प्रति वर्ष 80 लाख लोगों की मौत होती है।

मद (शराब) - मद सेवन से 7 प्रकार के कैंसर हो सकते हैं खाद्य नली, बड़ी आँत, स्तन के कैंसर आदि। मद सेवन से प्रति वर्ष 7,40,000 कैंसर होने का अनुमान है।

अधिक वजन/मोटापा, अनुचित खानपान, शारीरिक श्रम की कमी अधिक वजन/मोटापा की कारण 3.4 प्रतिशत कैंसर का अनुमान है जिसमें 1,10,000 स्तन कैंसर प्रति वर्ष हो सकता है। नियमित शारीरिक व्यायाम, स्वस्थ शारीरिक वजन और स्वस्थ आहार कैंसर की रोकथाम के लिए आवश्यक है।

संक्रमण (Infection) - Hepatitis B Virus और Human Papilloma Virus (HPV) के कारण 25 प्रतिशत कैंसर हो सकते हैं। Hepatitis B Virus और Human Papilloma Virus (HPV) से बचने के लिए टीका (Vaccine) उपलब्ध है जो यकृत (Liver) और गर्भाशय ग्रीवा कैंसर से बचाव करता है।

प्रदुषित वातावरण - वातावरण प्रदूषण से प्रतिवर्ष करीब 40 लाख लोगों की मौत होती है जिसमें 6 प्रतिशत मृत्यु फेफड़े के कैंसर से होती है।

कार्यस्थल के कैंसर कारक - फेफड़े के कैंसर, मूत्राशय के कैंसर, Mesothelioma कार्यस्थल पर Asbestos के कारण होते हैं।

विकिरण (Radiation) - Ionising Radiation से Leukemia (रक्त कैंसर) जैसी बीमारी हो सकती है। Ultra – Violet Radiation (Solar Radiation) से मनुष्य की त्वचा का कैंसर हो सकता है।

प्रमुख संदेश :

प्रारंभिक पहचान और उपचार में प्रगति के कारण, अब कई कैंसर का पूर्ण इलाज संभव है ।

सामुहिक प्रयास कैंसर देखभाल को बढ़ा सकते हैं और रोगियों के लिए परिणामों को सुधार सकते हैं।

कैंसर और इसकी चुनौतियों के बारे में समाज को सूचना देकर, हम एक साथ रोकथाम, प्रारंभिक पहचान, और बेहतर उपचार रणनीतियों की दिशा में काम कर सकते हैं। इस ज्ञान को फैलाने की प्रतिबद्धता कैंसर के खिलाफ लड़ाई में एक महत्वपूर्ण कदम है।

अधिक जानकारी हेतु:

1. www.who.int
2. www.cancer.gov
3. www.cancer.org

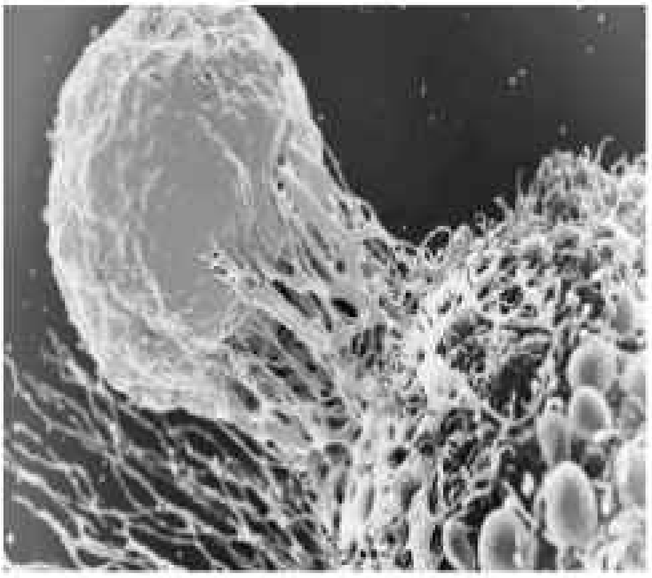

पिकनिक का उल्लास

राजेश कुमार रंजन
कार्यालय अधीक्षक/कार्मिक विभाग, हावड़ा

हम मनुष्य सामाजिक प्राणी हैं इसका मतलब यह कि हम अकेले नहीं रह सकते, अपने अस्तित्व के लिए समूहों में रहने की आवश्यकता होती है। समूह में रहने के कई लाभ हैं, यह हमें समर्थन, शक्ति, खुशी, साहस, एकता की भावना प्रदान करता है।

दोस्तों के साथ पिकनिक पर जाने का अलग ही आनंद होता है। किंतु आज की व्यस्त जिंदगी ने हम सभी की दिनचर्या ने तनाव से इतना व्यस्त कर दिया है कि अपनों से मिलने तक का समय नहीं होता। इस व्यस्तता में एक साथ पिकनिक पर जाना एक संजीवनी का काम करता है।

बहुत दिनों से हम सभी एक साथ कहीं घूमने नहीं गए थे, बहुत कोशिश के बाद (ईएसी, ईएटी और ईबी) सेक्शन के बंधु एकसाथ पिकनिक के लिए राजी हुए और पिकनिक की तैयारियां शुरू हुई, जैसे स्पॉट बुकिंग, कैंटीन, म्यूजिक, गेम आदि।

पिकनिक को लेकर हर सदस्य उत्साहित था (खासकर अजय भाई एवं अरून जी) चूँकि यह संपूर्ण तीनों सेक्शन का पहला सामूहिक प्लान था इसलिए हमसभी लोग बिल्कुल अलग रूप में थे।

आखिरकार, वो दिन आ गया हम सभी अपने-अपने घर से पिकनिक के लिए निकल गये।

अंततः हम अपने गंतव्य पर पहुंच गये। "उल्लास पिकनीक स्पॉट" अंदर जाते ही उस जगह की खूबसूरती ने हमारे चेहरे पर ठंडी हवा के साथ स्वागत किया।

उद्यान विशाल और कुशलता से विशेष प्रकार के पौधों और पेड़ों से सजाया गया था। अनेक पेड़ो के बीच गुलाब, सूरजमुखी, चमेली इत्यादि के पौधे भी थे। जिसकी खूबसूरती देखते ही बनती थी।

यह एक आनंददायक दिन था और हम दिन के उजालों में बगीचे में बैठ गए। हमने कई खेल खेले जैसे विकेट हिटिंग, म्यूजिकल चेयर, फाइंडिंग एंड हीटिंग द बोतल, पीलो पासिंग इत्यादि।

भोजन के लिए पहले से ही ऑर्डर दिया हुआ था, हमारा गर्म और स्वादिष्ट भोजन आया। खाने के साथ ही म्यूजिक शुरू हो गया। थिरकते संगीत की धुनों पर जो नृत्य हुआ उसे कोई कैसे भूल सकता है खासकर के देबू का डांस, हर संगीत पर परफेक्ट स्टेप के साथ डांस। संगीत में प्रत्यूषा और अजय की युगल गीत एवं श्रुति की आवाज ने सबको खुश कर दिया।

अब हमलोग पिकनिक के अंतिम दौर में पहुंच चुके थे। गेम में विनर के साथ पिकनिक के आयोजन में मुख्य भूमिका निभाने एवं पिकनिक में शामिल होने के लिए सभी को पुरस्कार हमारे मुख्य अतिथि रिटायर्ड सौमित्रो दा के द्वारा दिया गया।

हालांकि पिकनिक खत्म हो गई थी फिर भी यादों में जीवित है सभी अच्छे समय हमने एकसाथ बिताए, बहुत सारी खूबसूरत तस्वीरें लिए जो हमारी यादों में हमेशा साथ रहेंगे।

यह बेहद सुखद क्षण था जब हम सब ने एकसाथ इतना मजा किया। हम सभी को समय-समय पर ऐसी गतिविधियां करते रहना चाहिए। इससे आपसी समझ, संबंध, लगाव और प्रेम बढ़ता है।

नारी स्वाभिमान

आशुतोष श्रीवास्तव
स्टेशन मास्टर, इज्जतनगर

मान लिखूं, सम्मान लिखूं मैं,
आशय और बखान लिखूं मैं।।
जिस नारी पर दुनिया आश्रित,
उसका ही बखान लिखूं मैं।।
मान लिखूं, सम्मान लिखूं मैं.....

जीवन ऐसी बहती धारा,
जिसका प्यासा स्वयं किनारा।।
पत्थर-पत्थर अश्क उकेरे,
अधरों पर मुस्कान लिखूं मैं।
मान लिखूं, सम्मान लिखूं मैं.....

कोमल है कमजोर नहीं है,
नारी है यह डोर नहीं है।।
मनमर्जी इसके संग कर ले,
इतना कब आसान? लिखूं मैं।।
मान लिखूं, सम्मान लिखूं मैं.....

बेटा हो या बेटी प्यारी,
जन्म सभी को देती नारी।।
इसका अंतस पुलकित कोमल,
इसके भी अरमान लिखूं मैं।।
मान लिखूं, सम्मान लिखूं मैं.....

हिम्मत से तकदीर बदल दे,
मुस्कानों में धीर बदल दे।।
प्रेम आस विश्वास की मूरत,
शब्द-शब्द गुणगान लिखूं मैं।।
मान लिखूं, सम्मान लिखूं मैं.....

समय की बात मनुष्य के साथ

राकेश रोशन
कार्यालय अधीक्षक/संरक्षा विभाग/हावड़ा

विस्तृत काल खंड, मैं समय हूं।
मै देख रहा हूं चिर काल से तुम्हारा उत्थान पतन, मैं समय हूं।
मैंने देखा मृग छाल वरण, मैंने देखा विकसित तन-मन।
देखा कंद मूल से भोजन पाते, देखा सरोवर जल से प्यास बुझाते।
तुमने विकाश के सोपान चढ़े, पशुता से ऊपर उठकर काम किया।
तुमने वसुधा को परिश्रम से पुष्पित-पल्लवित निश्काम किया।
ईश्वर कि अनुकंपा तुम पर, तुमने ज्ञान का विस्तार किया।
तुमने पर्वत को मोड़ दिया, जल, थल, अग्नि को वश में किया।
इतिहास साक्षी है तुम्हारे शौर्य और वीरता का।
तुम्हारे द्वारा किये गए, किये गए व्रत और शिलता का।
पर हे मनुष्य ये हुआ क्या इक्कीसवी सदी में।
तुम भूले भाईचारे और पड़ गए खुदी में।
दुनियां तुम्हारी मुट्ठी में पर समय का अभाव है।
सामाजिक जीवन और प्रकृति पर तुमने दिये अनेकों घाव हैं।
तुमने विचारों को कुंठित कर लिया है,
सद्भावना और प्रेम को कलंकित कर दिया है।
माता-पिता, बंधु-बांधवों को छोड़ मोबाइल की काल्पनिक दुनियां में रहते हो।
समाज की सुव्यवस्था में योगदान नहीं दे पा रहे, स्वयं भी कष्ट सहते हो।
हे प्रिय लौटो पुनः मनुष्यता और प्रकृति कि ओर।
अन्यथा समय बीत जाने पर होगा प्रकृति का प्रकोप।
आओ आने वाली पीढ़ियों के लिए कुछ तो अच्छा करके जाएं।
तन-मन विचारों को शुद्ध करें और पेड़ लगायें।
पुनः अपनी उज्जवलता का प्रसार करो।
तुम ईश्वर की सबसे अनुपम कृति 'मनुष्य' हो, इसका भान करो।
स्वयं कि सेवा से सम्पूर्ण सृष्टि का कल्याण करो।
स्वयं कि सेवा से सम्पूर्ण सृष्टि का कल्याण करो।

दादा जी

कामेश्वर पांडेय
अवकाशप्राप्त राजभाषा अधिकारी
हावड़ा मंडल, पूर्व रेलवे, हावड़ा

आज आप क्यों आई? भाभी। दादा जी की तबियत ठीक नहीं है क्या? बच्चे का हाथ पकड़कर स्कूल पूल कार में चढ़ाते हुए कार के ड्राइवर ने पूछा। सबिता जी ने उत्तर दिया- हां। आज दादा जी की तबियत ठीक नहीं है। लेकिन सबिता जी के उत्तर से ड्राईवर को संतुष्टि नहीं हुई। गाड़ी (कार) चलने पर बच्चे से ड्राईवर ने असली कारण जानना चाहा। बच्चे प्रायः निर्दोष और सीधे सादे होते हैं और निष्कपट भी, सो पूछने पर उसने बताया कि 'भैया! अब दादा जी मुझे छोड़ने कभी नहीं आयेंगे। वे हम लोगों से अलग रहने लगे हैं। परसों रात मेरी मां ने उनको बहुत कुछ बोला और पिताजी मां के सामने चुपचाप रहे। तीखे वाण के समान वाणी से आहत होकर दादा जी ने घर छोड़ दिया।!' दादा श्रीकांत वर्मा एक रिटायर शिक्षक थे और पत्नी के देहावसान के बाद बेटा-बहू के साथ ही रहते थे। कभी-कभी बहू की झिड़की सुनकर अनसुनी कर देते थे लेकिन आज कुछ ज्यादा हो गया और दुःखी होकर वर्मा जी ने घर छोड़ दिया। यद्यपि यह घर उनके नाम ही था तथापि वे भाड़े में रहने लगे, बेटा-बहू को बेघर करना उन्होंने मुनासिब नही समझा।

न जाने कितने श्रीकांत वर्मा हमारे समाज में सिसकी भर-भर कर जी रहे हैं और कभी-कभी अपने पुराने आदर्शों की ओर लौट कर मन बहला लेते हैं। गनीमत यह थी कि वर्मा जी पेंशनधारी थे अतः उनकी आजीविका का साधन मौजूद था, लेकिन जरा सोचिए उस श्रीकांत वर्मा के बारे में जिनका कोई सहारा नहीं है और जो अपने समय में बच्चों की हर खुशी के लिए अपनी पाई-पाई कमाई की रकम उन्हें (पुत्रों को) दे देते हैं और वे अपनी झूठी शान एवं अहं में पड़कर उस देवता तुल्य त्याग मूर्ति पिता को घर से बेघर कर देते हैं। कितना दर्द होता है जब आदर्श और नैतिकता को दर किनार कर ऐसा कदम उठाया जाता है। जीवन के इस मोड़ पर जब बाप को बेटे के सहारे की जरूरत पड़ती है तब वह बेटा अपना हाथ पैर समेट लेता है और बाप को बेसहारा छोड़ देता है। खैर छोड़िये इन बातों को, आगे श्रीकांत वर्मा जहाँ रहते थे उसके समीप ही एक छात्रावास था जहां बच्चे रहते थे और उस छात्रावास का उत्तरदायित्व एक आदमी पर था। उस व्यक्ति से श्रीकांत वर्मा की मुलाकात हुई और उनकी व्यथा सुनकर उस व्यक्ति ने बच्चों की देखभाल का काम वर्मा जी को सौंपना चाहा। वर्मा जी भी खुशी खुशी उसके प्रस्ताव को मान गये। चूंकि वर्मा जी अपने जीवन काल में शिक्षा का काम कर चुके थे इसलिए इस जिम्मेदारी को बखूबी निभाने लगे। बच्चे भी वर्मा जी की बातों का आदर करते थे और बड़े अनुशासित ढंग से अपनी पढ़ाई भी करते थे। वर्मा जी का समय भी कट जाता था और छात्रावास के भोजनालय से भोजन भी कर लेते थे। बड़े आराम से समय कटने लगा। समय वे समय बच्चों को पढ़ा भी देते थे और वो भी बिल्कुल मुफ्त।

एक बार की घटना ऐसी हुई कि उस स्कूल के बच्चों को दूसरे स्कूल के बच्चों के साथ प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में भाग लेना पड़ा और छात्रावास के प्रभारी के अस्वस्थ रहने के कारण वर्मा जी को ही बच्चों को ले जाने का भार सौंपा गया। यद्यपि वे स्कूल के कर्मचारी नहीं थे तथापि उनके सौम्य स्वभाव के कारण छात्रावास एवं स्कूल प्रशासन उन्हें अपना अभिन्न अंग मानने लगा था। वहां जाने पर माजरा कुछ और हो गया और वहां के लोगों ने वर्मा जी को निर्णायक मंडल में शामिल होने का अनुरोध किया।

वर्मा जी के लाख न चाहने के बाद उन्हें लोगों के आग्रह को स्वीकार करना पड़ा। काफी बच्चे थे और क्रमवार कक्षा के अनुसार प्रतियोगिता आयोजित हुई

थी। सभी बच्चे बड़ी उत्सुकता से अपने प्रतिभागी मित्रों को देख रहे थे। चूंकि प्रतियोगिता अन्तर्विद्यालय समूह की थी इसलिए संबंधित स्कूल के किसी शिक्षक को निर्णायक मंडल में नहीं रखा गया था ताकि शक और पक्षपात की गुंजाइश न रह सके। प्रशासन द्वारा इस निर्णय का सभी ने स्वागत किया। निर्णायक मंडल में स्थानीय मदरसे के एक मौलवी शिक्षक, छात्रावास के केयर टेकर वर्मा जी और संस्कृत विद्यालय के प्रधानाचार्य थे। ज्ञातव्य रहे कि इन दोनों विद्यालयों के छात्र इस प्रतियोगिता के प्रतिभागी नहीं थे इसी कारण निष्पक्ष न्याय की गारंटी भी हो गई। सभी कार्यक्रम सुचारू रूप से प्रारम्भ होने की सारी तैयारियां कर ली गयी थी। समय पर सारा कार्यक्रम आरम्भ हो गया और निर्णायक मंडल ने अपना आसन ग्रहण कर लिया। एक लड़का बार-बार निर्णायक मंडल की कुर्सी (वर्मा जी) की ओर निहार कर खुश हो रहा था। सौभाग्य या दुर्भाग्य से वह बालक पांचवीं कक्षा का छात्र था और वर्मा जी का पोता था। उस बालक को खुशी हो रही थी कि दादा जी निर्णायक मंडल में हैं तो उसका पुरस्कार अवश्यम्भावी है और ऐसा सोचना उसका लाजमी भी है। पांचवीं कक्षा की प्रतियोगिता जैसे शुरू हुई तो दो विद्यार्थियों ने एक ही साथ एक प्रश्न का सही उत्तर दिया। अब प्रश्न यह खड़ा हुआ कि प्रथम स्थान किसको दिया जाय। निर्णायक मंडल में से किसी को यह पता नहीं था कि उसमें से एक प्रतिभागी वर्मा जी का अपना पोता था। लेकिन सम्यक विचार से निर्णय यह निकला कि पहला लड़का प्रथम स्थान का हकदार है और दूसरा लड़का (वर्मा जी का पोता) दूसरे स्थान का। अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान बहुधा हमारे संकुचित व्यवहारों का सुधाकर होता है। और हुआ वही जो सही था। वर्मा जी का जमीर जीवित था इसलिए निष्पक्ष न्याय हुआ। उनका पोता फूट-फूट कर रो रहा था और दादा जी की ईमानदारी पर फक्र करते हुए अपने दादा जी के बारे में साथियों को बता रहा था। ऐसे थे दादा जी। उनके बेटे-बहु पिताजी की मर्यादा एवं ईमानदारी का मन ही मन गुणगान कर रहे थे। दोनों निरुत्तर थे। धन्य है। दादा जी की ईमानदारी जिस पर हर दादा जी को नाज होना चाहिए। बेटे-बहु के लाख अनुनय के बावजूद भी श्रीकांत वर्मा जी ने पुराने घर में लौटना स्वीकार नहीं किया और उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा, 'पहले ही काफी जलील हो चुका हूँ अब और जलील मत होने दो बेटा। उस जिल्लत को अब मेरी बुढ़ापा नहीं झेल पायेगी।' पोता की सजल आँखें बरसाती नाला हो रही थी, और वह चुपचाप सिसक रहा था।

अगर हिन्दुस्तान को सचमुच आगे बढ़ना है, तो चाहे कोई माने या न माने, राष्ट्रभाषा तो हिन्दी ही बन सकती है।

- राष्ट्रपति महात्मा गांधी

मेरा गांव अब उदास रहता है...

पूर्णेन्दु शेखर सिन्हा
सहायक कल्याण अधिकारी
लिलुआ वर्कशॉप

लड़के जितने भी थे मेरे गांव में।
जो बैठते थे दोपहर को आम की छांव में।
बड़ी रौनक हुआ करती थी जिनसे घर में
वो सब के सब चले गए शहर में।
ऐसा नहीं कि रहने को मकान नहीं था।
बस यहां रोटी का इंतजाम नहीं था।
हास-परिहास का आम तौर पर उपवास रहता है।
मेरा गांव अब उदास रहता है।।
बाबू जी ठंड में सिकुड़े और पसीने में नहाए थे।
तब जाकर तीन कमरे किसी तरह बनवाए थे।
अब तीनों कमरे खाली हैं मैदान वेजान है।
छतें अकेली हैं, गलियां वीरान हैं।
मां का शरीर भी अब घुटनों पर भारी है।
पिता को हार्ट और डाइबिटीज की बीमारी है।
अपने ही घर में मां-बाप का वनवास रहता है।
मेरा गांव अब उदास रहता है।।
छत से बतियाते पंखे, दीवारें और जाले हैं।
कुछ मकानों पर तो कई वर्षों से ताले हैं।
बेटियों को ब्याह दिया गया ससुराल चली गई।
दीवाली की फुलझुरी होली का गुलाल चली गई।
मोहल्ले में जाओ जरा झांको कपाट पर।
बैठे मिलेंगे अकेले बाबू जी, किसी कुर्सी, किसी खाट पर।
सावन के झूले उतर गए भादों भी निराश रहता है।
मेरा गांव अब उदास रहता है।।
कबड्डी वालीबॉल अंताक्षरी, सब वक्त की तह में दब गए।
हमारे गांव के लड़के कमाने अहमदाबाद जब गए।
अब रामलीला, दुर्गापूजा की वो बात नहीं रही।
गर्मियों में छतों पर हलचल की रात नहीं रही।
दालान में बैठे बुजुर्ग भी स्वर्ग सिधार गए।
जो जीत गए थे मुश्किलों से वो बीमारियों से हार गए।
ये अंधी दौड़ तरक्कियों की गांव सूना कर गई।
खालीपन का घाव अब तो दोगुना कर गई।
जाने वाले चले गए, कहां कोई अनायास रहता है।
मेरा गांव अब उदास रहता है।।

एक वो दौर था, एक ये दौर है!

एक वो दौर था, एक ये दौर है।
कितना कुछ अब बदल गया है,
बेफ़िक्र भी अब सँभल गया है,
सूनी पड़ी हैं बरगद की शाखें,
बचपन वो अब निकल गया है,
भूलकर वो मासूम उधम अब,
जीवन आपही बन गई दौड़ है,
एक वो दौर था, एक ये दौर है।

श्वेत कमीज पर माटी का इत्र था,
धड़ पकड़ का वो खेल विचित्र था,
वो नंगे पाँव में कीचड़ मलकर,
यूँ ही जाना मीलों पैदल चलकर,
अब रोज़ी रोटी के चक्कर में,
ना खेल पर ना सेहत पर ग़ौर है,
एक वो दौर था, एक ये दौर है।

दोस्तों संग घंटों गप्पें करना,
साथ में उठना साथ में बैठना,
व्यस्त रहते भी उनका सारा वक़्त अपना था,
सोच अलग पर आँखों में एक ही सपना था,
ज़िन्दगी है जब तक, दोस्त रहेंगे
पर वक़्त के बहाव में सारे दोस्त बिछड़ गए,
अब कल कोई और था आज कोई और है,
एक वो दौर था, एक ये दौर है।

प्रदूषण मुक्त त्योहार स्वच्छ भारत की पहल

रोहन पटेल
कनिष्ठ लिपिक सह टंकक
वरि. मं. इंजी. (एच एम)

हमलोगों के जीवन में त्योहार बहुत खास अहमियत रखता है क्योंकि सभी लोग अपनी रोजमर्रा के जीवन में व्यस्त रहते हैं, लेकिन जैसे ही त्योहारों का मौसम आता है, सभी लोगों में बहुत उत्साह एवं उमंग भर जाता है। बहुत सारी खरीददारी की जाती है, तो कहीं छुट्टी का प्लान बैठाया जाता है। सभी वर्ग के लोग, क्या अमीर क्या गरीब। सभी अपनी कठिनाइयों एवं कष्टों को भूलकर त्योहारों को बहुत आनंद से मनाते हैं।

लेकिन यह सब तो त्योहारों के अच्छे प्रभाव का विवरण दिया मैंने। किन्तु हमारे त्योहारों की खुशियाँ हमारे लिए इस कदर मायने रखती हैं कि हम इसके दुष्परिणामों को भूलते जा रहे हैं। हमलोगों को यह नहीं भूलना चाहिए कि हमलोग जिस परिवेश में रहकर त्योहारों को मनाते हैं, हमलोग उसी परिवेश को दूषित कर रहे हैं। जिसकी वजह से अगर सबसे प्रदूषित कुछ होता है, तो वो है वायु। उसके बाद ध्वनि एवं जल प्रदूषण होता है।

क्या हम कल्पना कर सकते हैं कि जिस वायु के बिना हम 5 सेकेंड भी जिंदा नहीं रह सकते हम उसी वायु को दिन प्रतिदिन दूषित कर रहे हैं और ऊपर से उस वायु को गंदा करने में हमलोग पैसा भी खर्च कर रहे हैं। जिसका सीधा-सीधा उदाहरण है दिवाली पर जलाए गए पटाखें, चरखी इत्यादि। पटाखों की वजह से सबसे अधिक प्रभावित भारत का उत्तरी क्षेत्र है। जिसमें सबसे अधिक खराब की स्थिति हमारे देश की राजधानी दिल्ली की है। वहां पर पी.एम. 2.5 मानक का स्तर सबसे खराब स्थिति के पैमाने को पारकर उसका दोगुना हो जाता है। जिससे वहाँ के लोगों में फेफड़ों संबंधी स्वास्थ्य संबंधी बहुत सारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। पटाखों से निकलने वाले सल्फर डाई ऑक्साइड जहरीला गैस स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक होता है।

यह तो बात हुई बस त्योहारों से होने वाले वायु प्रदूषण की। आईये अब बात करते हैं, ध्वनि एवं जल प्रदूषण पर इसके प्रभाव। ध्वनि प्रदूषण के पीछे सबसे बड़ा हाथ त्योहारों के लिए बने बम का है। जिसे चलती भाषा में चॉकलेट बम बोलते हैं। बम के फटने से जो ध्वनि निकलती है वह हमारे कानों की सहन क्षमता जिसे डेसीबल बोलते हैं में मापा जाता है उससे अधिक होती हैं। जिसके बहुत देर तक बजने से हमारे कान सुन्न हो जाते हैं, जिससे कानों को नुकसान पहुँचता है। इसका सबसे अधिक प्रभाव बुजुर्गों पर पड़ता है। पटाखों की तेज आवाज से उनके कानों में तकलीफ होती है।

हमलोगों के बहुत से ऐसे त्योहार हैं। नदियों को बहुत खास अहमियत है जिसमें नदियों की पूजा करना एवं

नदियों में मूर्तियों को विसर्जित करना इनमें से एक है। इसके कारण हमारे नदियों में प्रदूषण बढ़ता जाता है।

इतनी देर से मैंने कई प्रकार से होने वाले प्रदूषणों पर चर्चा की। आइये अब देखते हैं मेरे नजर से कि किस तरह हम अपने त्योहारों को प्रदूषण मुक्त कर सकते हैं। सबसे पहले हमलोगों को यह प्रण लेना होगा कि हमें साफ-सुथरा एवं प्रदूषण मुक्त त्योहार मनाना है। उसके बाद हमें तेज आवाज करने वाले पटाखों पर प्रतिबंध लगाना चाहिए। इको-फेंडली पटाखों पर जोर देना चाहिए पटाखे जलाने का निश्चित समय सीमा बाँध देना चाहिए ताकि लोगों को दिक्कतों का सामना न करना पड़े। मुमकिन हो तो हमें एकदम कम से कम पटाखों का उपयोग करना चाहिए। कम्युनीटी दिवाली पर जोर देना चाहिए ताकि इसके प्रभावों को और कम कर सकते हैं, कम्युनीटी दिवाली पर पटाखों के बजाय लाईटिंग शो का आयोजन कर हम इसे और कामयाब बना सकते हैं। जिससे हम वायु के प्रदूषण को कम कर सकते हैं।

जल के त्योहारों को मौसम में दूषित होने से बचाने के लिए हमें नदियों में कुछ भी फेंकने पर रोक लगाना चाहिए। मूर्तियों को विसर्जित कर तुरन्त निकाल देना चाहिए।

इस तरह के कुछ ठोस कदम उठाकर हम अपने त्योहारों को और सुख एवं आनन्दमय तरीके से मना सकते हैं एवं सभी लोगों को प्रदूषण मुक्त त्योहार का तोहफा दे सकते हैं।

राजभाषा अधिनियम 1963
यथा संशोधित 1967 की धारा 3(3)

1. सामान्य आदेश	General Orders
2. संकल्प	Resolution
3. परिपत्र	Circulars
4. नियम	Rules
5. प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन	Administrative or other reports
6. प्रेस विज्ञप्तियां	Press Release/Communiques
7. संविदाएं	Contracts
8. करार	Agreements
9. अनुज्ञप्तियां	Licences
10. निविदा प्रारुप	Tender Forms
11. अनुज्ञा पत्र	Permits
12. निविदा सूचनाएं	Tender Notices
13. अधिसूचनाएं	Notifications
14. संसद के समक्ष रखे जाने वाले प्रतिवेदन तथा कागज पत्र	Reports and documents to be laid before the Parliament

राजभाषा नियम, 1976 नियम 6 के अनुसार उपर्युक्त दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले का दायित्व होगा कि ऐसे दस्तावेज हिंदी और अंग्रेजी दोनों में तैयार किए जाएँ और जारी किए जाएँ।

उड़ान

रवि कुमार यादव
मोटरमैन, रामपुरहाट

एक घोसले से उड़े थे हम
एक घरौंदे की तलाश में
इस उड़ान में
अपना गाँव छूटा
अपनों का अपनापन छूटा
थे हम जिनके बुढ़ापे की लाठी
उनका भी साथ छूटा
अपना सब कुछ छूटा
बस चंद पैसों की तलाश में
आज सब कुछ तो है पास में
हर खुशी है दामन में
पर होठों से अपना
मुस्कान छूटा
पा लिया हमने सब कुछ
पर हमसे हमारा
खुशियों का जहान छूटा
एक घोसले से उड़े थे हम
एक घरौंदे की तलाश में
आया ख्याल हमें तब
जब हमारे बच्चे उड़े
अपनी मंजिलों की तलाश में
सब कुछ तो है बिखरा यहाँ
आज हमारे आसपास में
पर कोई नहीं है अपने पास में
जिसके कंधे सर रख कर रो लें हम
जिसकी ख़ातिर एक बार
प्यार से मुस्कुरा ले हम
अब तो हम बस खुद से ही
खुद की बातें करते हैं
और पूँछते हैं खुद से
एक सवाल बार-बार हर बार
आखिर क्या पाया
और क्या खोया है हमने
जिंदगी की इस उड़ान में
एक घोसले से उड़े थे हम
एक घरौंदे की तलाश में

वक्त

बढ़ती उम्र के साथ
खुशियों के मायने बदल जाते हैं
गुजरते वक्त के साथ
हालात बदल जाते हैं
बढ़ती दूरियों के साथ
रिश्तों के मायने बदल जाते हैं
आप बदलो ना बदलो खुद को
पर वक्त के साथ अपनों के
ख्यालात बदल जाते हैं
जाने क्या चीज है
ये वक्त
जो होता नहीं है
कभी भी किसी का सदा
फिर भी लोग यहां
वक्त-वक्त की बात करते हैं
आज आये हैं जग में
चंद पल साथ जीना है यहाँ
फिर चुपके से हमें
चले जाना है इस जहां से
फिर ये
मान कैसा अपमान कैसा
और ये अभिमान कैसा
जो भी है जैसा भी है
सब वक्त-वक्त की बात है

हिंदी प्रचार-प्रसार

जय प्रकाश प्रसाद
मुख्य कार्यालय अधीक्षक
पूर्व रेलवे, हावड़ा

(1) करहु बिलम्ब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु शूल।
निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जो सबकी मूल।।

यह अंश मातृभाषा शीर्षक से लिया गया है। इसके रचयिता श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी हैं। ये पंक्तियाँ ब्रजभाषा में लिखी गई हैं।

सर्वप्रथम हम सभी भारतीयों को अपनी मातृभाषा की उन्नति करना और उसका प्रचार-प्रसार करना चाहिए यह बहुत आवश्यक है। अर्थात भाषा का प्रसार होने से शिक्षा का महत्व एवं अज्ञान दूर होता है।

(2) निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को सूल।।

अर्थात मातृभाषा के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि मातृभाषा की उन्नति ही सभी उन्नति की जड़ है। मातृभाषा के ज्ञान का जितना अधिक प्रचार-प्रसार होगा उतना ही देश की उन्नति होगी।

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर सुनकर, लिखकर व पढ़कर अपने मन के भावों या विचारों को आपस में आदन-प्रदान करते हैं।

<u>भाषा हिंदी भाषा</u>

हम अपनी मातृभाषा हिंदी के वर्णमाला अक्षर को सामूहिक रूप में शब्दों को संयोग कर वाक्य बनाते हैं। जो सामने वाला पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया देता है। वैसे भी अपनी भाषा को शब्दों में रुपान्तर कर अच्छे वाक्य बनाकर हम बोलते हैं शब्दों का हर समुह जिसका पूरा-पुरा अर्थ समझ में आ जाय।

<u>सार्थक शब्द :-</u>

ऐसे सार्थक शब्द बोले जिसका कुछ अर्थ निकलता हो। यह अपनी भाषा प्रचार-प्रसार करने में महत्व रखता है।

<u>निरर्थक शब्द :-</u>

ऐसे शब्द जिनसे कोई अर्थ नहीं निकलता हो अर्थात् व्यवहार ना करने वाले शब्द होते हैं।

हिंदी भाषा ब्रजभाषा संस्कृत और दियासी का मिश्रित रूप है। यदि अपनी हिंदी भाषा में सभी प्रकार की शिक्षाऐ दी जायें तो उन्हें सुनकर अच्छी तरह से समझा जा सकेगा।

यह पंक्ति वर्णित है कवि भारतेन्दु हरिश्चन्द की कविता मातृभाषा में

विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार
सब देशन से ले करहू भाषा माहि प्रचार।

कवि का कहना है कि आप अनेक प्रकार की कलाओं, सब प्रकार की शिक्षा अनेक प्रकार का ज्ञान आदि सभी देशों से लेकर अपनी मातृभाषा में देशवासियों को प्रचार करो। क्योंकि अपनी मातृभाषा हिंदी सब समझ सकते हैं।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।

- महात्मा गांधी

टैरेस गार्डन

विकास कुमार साव
कनिष्ठ अनुवादक, पूर्व रेलवे, हावड़ा

आरम्भ से ही प्रकृति अपने दोनों रूपों (आलम्बन एवं उद्दीपन) में मानव समाज को अपनी ओर आकर्षित करती रही है। यही कारण है कि आज भी बहुत प्रकृति-प्रेमी प्रकृति के रम्य सौंदर्य से अभिभूत होकर इनमें ही रमें रहने की कामना प्रकट करते रहते हैं। जब भी लोगों को अपने व्यस्त जीवन-शैली से थोड़ा समय मिलता है वे अपने बोझिल जीवन को थोड़ा सुकून देने के लिए एवं प्रकृति के अनुपम सौंदर्य का लुफ्त उठाने हेतु उनकी ओर चल देते हैं। कुछ प्रकृति-प्रेमी ऐसे भी होते हैं जो अपने घरों में ही फूल-पौधे व क्यारियाँ, सब्जियाँ लगाकर प्रकृति के विविध रूपों का लुफ्त उठाना शुरू कर देते हैं। घरों में लगाए जाने वाले बाग-बगीचों का यह छोटा रूप टैरेस गार्डन के नाम से बहुचर्चित है।

वर्तमान समय में अपेक्षाकृत छोटे घरों में, फ्लैटों में रहना हमारी जीवन-शैली का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया है। ठीक वैसे ही टेरेस गार्डन भी आधुनिक युग में बाग के पर्याय के रूप में उभर कर आया है। बड़े-बड़े शहरों, महानगरों में तो साधारण आय वाले लोगों के लिए एकमात्र रिहायशी जगह फ्लैट ही दिख पड़ता है। फ्लैटों में रहने के इस सुविधाजनक चलन व प्रथा के साथ-साथ टैरेस या बालकनी का संग साथ अपने आप हमारे करीब चला आया है और ऐसे में टैरेस गार्डन ने एक जरूरत की तरह बागवानी के शौकीनों के बीच अपनी जगह बना ली है।

आमूमन कई लोगों को बागवानी का बेहद शौक रहता है और उनके पास जमीन का अभाव होने के कारण वे लाचारवश बागवानी नहीं कर पाते हैं तो ऐसे में वे अपने टैरेस को बालकनी को एक छोटे से बाग में बदल देते हैं।

अपने बागवानी के शौक को पूरा करने के लिए आपका टैरेस एक अच्छे पर्याय की तरह आपके करीब आता है। जहाँ आप अपने छोटे-बड़े गमले रखें, छोटी माटी क्यारीनुमा संरचना बनाए। यदि टैरेस बड़ा हो तो कई गमलों को एक कतार में सजाया भी जा सकता है। टैरेस गार्डन लगाने के लिए सबसे पहले यह जरूरी है कि आप अपने टैरेस की सही अवस्थिति, आकार-प्रकार, दिशा-भाव को जानें कि आपका टैरेस कहाँ स्थित है, धूप किधर से आती है, हवा का रूख किस मौसम में, किस प्रकार के दबाव को रचता है आदि आदि।

सबसे पहले आपको जिस पर गार्डन बनाना है उस टैरेस की किस्म को पहचानना आवश्यक है। आपका टैरेस पूर्वोन्मुखी है या दक्षिणोमुखी, वह एकदम लंबाई लिए हुए है या गोलाई लिए। टैरेस के आकार-प्रकार को ध्यान से देखें और तब अपने टैरेस पर लगाए जानेवाले बाग की रूपरेखा को तय करें।

यदि आपके पास एक छायादार टेरेस है तो इस बात पर आपको अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि छायादार टेरेस जिस जगह पर अवस्थित है, वहाँ सिर्फ नम हवा, परावर्तित सूर्य किरणों की मौजूदगी रहेगी या नहीं रहेगी। ऐसे में होता यह है कि छायादार जगहों में पनपने वाले पौधों की फेहरिस्त प्राप्त करें। वैसे तो छायादार टैरेस पर क्रिसमस ट्री, मनी प्लांट की कई किस्में, लीली, फर्न की कई किस्में, बिजीलिजी आदि पौधे आसानी से लगाए जा सकते हैं।

और यदि आपके टैरेस पर हवा ही हवा है तो फिर आपको टैरेस गार्डन बनाना चाहिए जो जमकर डटा रहें। यानि तेज हवा के झोंकेवाले टैरेस पर आप उन पौधों को लगाएं जो या तो हवा के झोंके को सह सकें या तेज हवा में अपनी डाल झुका लें। उन्हें टूटने न दें। हवादार टैरेस गार्डन के साथ मुश्किल यह भी है कि तेज हवा पौधों के जड़ की मिट्टी को सुखा डालती है और पत्तों की नमी को उड़ा डालती है। हवादार टैरेस पर ग्यूल्डर रोज, हनी सक्कल, एनी मोन, केलेन्डुला आदि पौधों को लगाया जा सकता है।

टैरेस गार्डन आपके घरों के आस-पास रहने वाले पड़ोसियों एवं राहगीरों के ध्यान को न केवल अपनी ओर खींचता है बल्कि आपके प्रति प्रशंसा के दो-चार शब्द भी अभिव्यक्त करने के लिए बाध्य करता है।

अप्रैल फूल

अरूपम माइति
वरिष्ठ सेक्शन अधिकारी (लेखा)
पूर्व रेलवे, हावड़ा

मन्मथ जमकर अखबार में डूबे हुए थे। अचानक फोन बजने लगा। रिंग टोन लगभग खत्म होने वाले थे, मन्मथ ने फोन उठाया। लेकिन जैसे ही रतन बाबू का नाम देखा तो तुरंत फोन काट दिया। फिर अनजाने में दीवार पर नजर गई तो आज का तारीख मालूम हुआ। अरे, आज तो अप्रैल की पहली तारीख है। आज के दिन, रतन बाबू का फोन किसी भी हालत में नहीं पकड़ना चाहिए।

इसके पीछे एक छोटी-सी कहानी है। जो लोग रतन बाबू को जानते हैं, वे उनका फोन पकड़ने से बेहद डरते हैं। आज तो फिर 1 अप्रैल। आज तो उनसे बचकर ही रहना है। रतन बाबू को मन्मथ खुब जानते हैं। वह जो भुक्तभोगी है। इसलिए रतन बाबू का फोन न उठाने पर, उसको बिल्कुल भी खराब नहीं लगा। मन ही मन 'यत्ते सारे नाटक!' कहते हुए, वह फिर अखबार पढ़ने लगा।

नंदीपाड़ा में रतन बाबू, मन्मथ के पड़ोसी थे। मुहल्ला छोड़ने के बाद उनसे कभी मुलाकात नहीं हुई। रतन बाबू एक तरफ मजाक करते हैं, तो दूसरी तरफ खतरनाक भी है। एक बार ट्रेन में मन्मथ को रुमाल खरीदते हुए देख लिया तो तुरंत अफवाह फैला दी, कि मन्मथ की पत्नी नाराज होकर घर छोड़कर चली गई। इसलिए मन्मथ आज रुमाल लाना भूल गया। बस फिर गजब हो गया! तुरंत ट्रेन के हर कोने से मन्मथ की ओर सवालों की बौछार होने लगी - ये सब कैसे हुआ? सीमा भाभी कब से मायके में है? अब मन्मथ क्या करने वाला है? उसे मनाने जाएगा या लौटने का इंतजार करेगा? वगैरह-वगैरह। उस दिन का अनुभव, मन्मथ आज तक भूले नहीं।

आज मन्मथ, सीमा को डॉक्टर के पास ले जाने वाला थे। सीमा की तबीयत इन दिनों ठीक नहीं चल रही थी। डॉक्टर के वहाँ ग्यारह बजे तक पहुँचना था। उससे पहले बाजार का काम उसे निपटना है। रामराजा भंडार में घुसते ही दीनू बाबू से मुलाकात हो गई। दो-चार बातों के बाद, रतन बाबू का नाम उठा।

दीनू बाबू का चेहरा अचानक से गंभीर सा हो गया। बोल उठे,

'सुबह बेकार का झंझट हो गया।'

'कैसा झंझट?'

'रीता दी याद है?'

'कौन रीता दी?'

'अरे वही, विधवा महिला जो टीचर थीं। रतन बाबू के पड़ोस में रहती थी।'

'ओह, हाँ, याद आया।'

'तुम जानते ही हो, रीता दी हमेशा गली के कुत्ते, बिल्लियों को खाना खिलाती थीं।'

'हाँ, याद है। इसे लेकर नंदीपाड़ा के कई लोग शिकायत भी करते थे।'

'शिकायत करते थे, लेकिन रीता दी किसी की परवाह नहीं करती थीं।'

'रीता दी को क्या हुआ?'

'गगन बाबू को बेटे को याद है?'

'गगन बाबू का बेटा? मतलब बच्चू? जिसने पढ़ाई छोड़ दी थी और अपने पिता की राशन की दुकान संभाल रहा था?'

'हाँ, वही बच्चू। अब वह प्रमोटरी करता है। दिनरात उल्टे-सीधे लड़कों के साथ रीता दी के घर के सामने मंडली जमाए रहता है।'

'क्या कह रहे हो?'

'धंधा, भाई धंधा! प्रमोटिंग के लिए, रीता दी का घर हड़पना चाहता है।'

'अच्छा, ये बात है!'

'और क्या! ये तो मुहल्ले में सब जानते हैं। लेकिन कोई विरोध नहीं करता। कल रात जब रीता दी अपने घर के सामने कुत्ते, बिल्लियों को खाना खिला रही थीं, बच्चू

थोड़ी दूर पर खड़ा होकर उन्हें बुरी-बुरी बातें सुना रहा था।'

'क्यों?'

'अरे भाई, मकसद तो घर हड़पना है। तभी तो ऐसा करते हैं।'

'फिर क्या हुआ?'

'कल रात, इसी बीच रतन बाबू घर लौट रहे थे। उन्होंने रीता दी को परेशान होते हुए देख कर, गुस्से में बच्चू को जमकर डांट लगाई और पुलिस की धमकी भी दी।'

'ठीक ही तो किया।'

उसके बाद क्या हुआ सुनो तो।

क्या हुआ।

'हुआ ये की आज सुबह बच्चू अपने गैंग के साथ आया और रतन बाबू को घर से बाहर खींचकर थप्पड़, घूंसे मारे। जान से मारने की धमकी तक दी।'

'क्या कह रहे हो?'

'और क्या कहूं! बहुत बुरा समय चल रहा है भाई, बहुत बुरा।'

बातें सुनकर मन्मथ को रतन बाबू के लिए, बहुत दुखी हुआ। घर में पहुंचे तो सीमा बोली, सुना है, गुंडों ने रतन बाबू को इतना मारा कि उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा।'

'हूं, मैं भी तो वही सुनकर आ रहा हूं।'

सीमा के हाथ में बाजार का थैली थमाकर, कमरे में घुसते हुए, मन ही मन, सबेरे रतन बाबू की फोन की याद आयी। पॉकेट से फोन निकालकर मन्मथ ने, कॉल डिटेल्स पर नजर डाली तो मन में एक सोच आया,

'सुबह रतन बाबू ने मेरे को क्यों फोन किया?'

अचानक दिमाग में एक बात जाग उठी,

'रतन बाबू की बेटी का नाम तो मंजू है! अंग्रेजी में नाम सेव करने पर मंजू और मन्मथ, दोनों नाम लगभग साथ-साथ आते हैं। तो क्या, मंजू को फोन करने के चक्कर में रतन बाबू ने गलती से मन्मथ को फोन कर दिया?'

अच्छे कर्म स्वयं को शक्ति देते हैं और दूसरों को अच्छे कर्म करने की प्रेरणा देते हैं।

- प्लेटो

साहित्य की उन्नति किसी देश की सभ्यता की उन्नति का परिचय देती है।

- श्रीमती धर्म देवी

हमारी मानसिक उन्नति भली-भाँति तभी हो सकती है जब शिक्षा का माध्यम हिन्दी हो।

- राम नारायण मिश्र

चिनाब रेलवे ब्रिज - भारतीय रेलवे का उत्कर्ष

अंकिता साव
टीएम-IV
इंजीनियरिंग/हावड़ा

परिचय

हमारा देश भारत दुनिया का चौथा सबसे बड़ा रेल नेटवर्क है तथा हर दिन लगभग 2-4 करोड़ लोग भारतीय रेल में यात्रा करते हैं। भारतीय रेलवे में प्रतिदिन रेल का विस्तार किया जा रहा है और इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है भारत का रेलवे चिनाब ब्रिज। इंजीनियरिंग चमत्कार का सबसे बड़ा उदाहरण भारत के जम्मू-कश्मीर राज्य में देखने को मिला है। जम्मू से लेकर श्रीनगर तक कोई भी सीधा रेल का प्रसार नहीं था पर अब उधमपुर-श्रीनगर-बारामुला के इस रेलवे लाइन के बन जाने से 10-15 घंटों में किया जाने वाला सफर मात्र 5-6 घंटों में पूरा किया जा सकता है। यह ब्रिज संगलदान रेलवे स्टेशन और रियासी रेलवे स्टेशन के मध्य बनाया गया है। यह ब्रिज भारतीय रेल नेटवर्क के एक महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में कार्य करेगा और रेल यातायात को जम्मू एवं कश्मीर से जोड़ने में मदद करेगा। इसका निर्माण भारतीय इंजीनियरिंग का अद्वितीय उदाहरण है और यह वैश्विक स्तर पर भी अपनी संरचना और तकनीकी उन्नति के कारण चर्चा का विषय है।

पुल की संरचना एवं डिजाइन

चिनाब ब्रिज का डिजाइन अत्यधिक चुनौतीपूर्ण था क्योंकि यह पुल चिनाब नदी की गहरी घाटी में स्थित है। यह दुनिया का सबसे ऊंचा रेल सेतु और दुनिया का सबसे ऊंचा मेहराब सेतु बन गया है। इसके निर्माण के दौरान अनेक प्राकृतिक चुनौतियाँ भी सामने आई। इस पुल की ऊंचाई 353 मीटर है जो प्रतिष्ठित एफिल टावर से भी ऊंचा है। इसकी लंबाई लगभग 1315 मीटर है एवं इसका मुख्य मार्ग 10 मीटर चौड़ा है।

इस ब्रिज में 17 कंक्रीट पिलर और 4 विशाल मेटल आर्च है जो पुल के भार को संतुलित करते हैं।

निर्माण प्रक्रिया

इस ब्रिज की निर्माण प्रक्रिया अत्याधिक जटिल थी। इस परियोजना का प्रारंभ 2004 में हुआ था और इसके निर्माण में लगभग 17 साल लगे। वर्ष 2022 में यह ब्रिज पूरी तरह से तैयार हो गया। इस महत्वपूर्ण संरचना को बनाने में एफिल टॉवर से भी 4 गुना ज्यादा स्टील का इस्तेमाल किया गया है। स्थानीय विशेषज्ञता, निर्माण सामग्री की उपलब्धता तथा लागत को ध्यान में रखते हुए चिनाब रेल ब्रिज को एकल मेहराब स्टील पुल से निर्मित किया गया है। इस पुल के निर्माण के दौरान अंतर्राष्ट्रीय और भारतीय मानकों का पूरी तरह से पालन किया गया है। ये पुल भूकंपीय क्षेत्र V में स्थित है जो रिक्टर पैमाने पर 8 की तीव्रता का भूकंप, उच्च तीव्रता वाले विस्फोट तथा 266 किमी प्रति घंटा वाले गति की हवाओं का सामना कर सकता है।

महत्व एवं भविष्य

उत्तर रेलवे ने जम्मू के पास बसे उधमपुर और कश्मीर घाटी के उत्तर-पश्चिमी किनारे पर बसे बारामुला शहरों के मध्य केंद्र शासित प्रदेश जम्मू एवं कश्मीर में नई रेल लाइन की वृहद परियोजना शुरू की गई जिसे वर्ष 2004 में एक राष्ट्रीय परियोजना घोषित किया गया था। इस परियोजना की असाधारण चुनौती, बड़ी संख्या में सुरंगों एवं पुलों का निर्माण है जिन्हें हिमालय के कठिन भूगर्भीय वाले इलाकों में बनाया गया है। इस पुल का निर्माण न केवल भारतीय रेलवे के लिए बल्कि देश की समग्र बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए भी एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह पुल जम्मू एवं कश्मीर क्षेत्र को शेष भारत के हिस्सों से जोड़ने में मदद करेगा और विशेष रूप से यातायात और माल परिवहन में सुधार करेगा। इससे व्यापार, पर्यटन और स्थानीय विकास को भी बढ़ावा मिलेगा। यह रेलवे लाइन कटरा, रियासी, बनिहाल, काजीगुंड, अनंतनाग और श्रीनगर जैसे महत्वपूर्ण शहरों को जोड़ने का कार्य करती है जिससे यातायात काफी सुविधाजनक हो जाता है।

निष्कर्ष

चिनाब ब्रिज न केवल एक इंजीनियरिंग चमत्कार है बल्कि यह भारतीय रेलवे के बुनियादी ढांचे के भविष्य का भी प्रतीक है। इसकी अद्वितीय संरचना और निर्माण तकनीक यह साबित करती है कि भारतीय इंजीनियरिंग और निर्माण उद्योग किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए पूरी तरह सक्षम है। यह पुल भारतीय रेलवे के सामर्थ्य और क्षमता को प्रदर्शित करता है और भविष्य में इसके महत्व को और भी अधिक महसूस किया जाएगा

जीवन : एक परिचय

रविकांत चौधरी
तकनीशियन-1/लिलुआ

संसार में जब हम आते हैं। हमारे जन्म लेने से पूर्व ही हमारे जीवन की सारी योजनाएं बन चुकी होती है। हमारे माता-पिता कौन होंगे? भाई-बहन कौन होंगे? नौकरी कब मिलेगी? कब हमारा विवाह होगा? इत्यादि।

फिर भी हम जीवन के आपा-धापी में जैसे-जैसे बड़े होते जाते हैं हमारे अंदर यह जानने की उत्सुकता सतत् होती है कि आगे क्या होने वाला है? फिर शुरू होता है बचपन का सफर।

हम खुशी-खुशी अपने माता-पिता के साथ रहते हुए बड़े होते हैं। जीवन की सारी जरूरतों के लिए हम अपने माता-पिता पर निर्भर रहते हैं। अपनी हर खुशी और आवश्यकताओं को मारते हुए माता-पिता हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। जैसे ही हम बड़े हो जाते हैं हमें लगता है कि हमारे मां-बाप ने हमारे लिए किया ही क्या है? लेकिन इसका पता तब चलता है जब हम स्वयं मां-बाप बनते हैं। और तब हमें समझ में आती है अपनी जिम्मेदारी, कि हमारे मां-बाप ने किस तरह से हमें कितनी कठिनाइयों से पाल-पोस कर बड़ा किया?

आज समय तेजी से बदल रहा है, हम 21 वी सदी में जी रहे हैं। आज अत्याधिक आधुनिक युग है, आवश्यकताओं के हिसाब से बाजार में हर चीजें उपलब्ध हैं। आज रेडीमेन्ट का जमाना है। हर चीज रेडीमेंट बाजार में मिल रही है। चीजों की तरह हमारे रिश्ते भी रेडीमेन्ट हो गए हैं। पहले जैसा प्यार अब जीवन में कहीं देखने को नहीं मिलता है, रिश्तों में प्यार अब नाम के रह गए हैं। आज स्थिति इतनी भयावह हो गई है कि अपनों के बीच विश्वास की डोर टूटती चली जा रही है। सरेआम रिश्तों का खून हो रहा है। कोई रिश्ता पवित्र नहीं रह गया है। पैसा प्रधान बन गया है हर रिश्ते में। अगर आपके पास धन-सम्पति है, तो आप अपने सभी रिश्तेदारों में सर्वश्रेष्ठ माने जाएंगे।

यदि आप व्यवहारिक और संस्कारी है, किंतु आपकी आर्थिक स्थिति सही नहीं है, तो आपके अपने रिश्तेदार ही आपको बेकार और निकम्मा समझ लेते हैं। आज संसार में प्रेम व भाईचारा सिर्फ रिश्तेदारों का चारा बन गया है। जिनसे हमें मतलब रहता है उनसे हम रिश्ता तुरंत बना ले रहे हैं और जिसे हमें रिश्ता रखना ही नहीं है, उनसे हम दूरी बना ले रहे हैं। चाहे वह अपने खून के रिश्ते ही क्यों ना हो।

लोगों में लालच इस तरह से घर कर गया है, कि वह अपने खून के रिश्तों का भी कत्ल करने से नहीं चुकते हैं। संस्कार विहीन समाज में आज किसी से मदद की उम्मीद करना बेकार है।

भारत जैसे देश में जिसका अपना एक गौरवशाली इतिहास रहा है, वहां भी आज स्थिति इस तरह देखने को मिलती है। भारतीय सभ्यता-संस्कृति ने हमें अपने गुरूजनों और माता-पिता का आदर करना सिखाया है, आज ऐसे देश में रहते हुए रिश्तों के अपमान की सुर्खियां हर दिन अखबारों में पढ़ने को मिलती है। अत्याधिक आधुनिकता के कारण हमारा देश पश्चिमी सभ्यता को अपनाता जा रहा है। जिससे हम पतन की और बढ़ते चले जा रहे हैं। इतिहास गवाह है कि जिस देश ने अपनी सभ्यता और संस्कृति को खो दिया उस देश का नामोनिशान दुनिया से मिट जाता है।

आज पश्चिमी देशों की सभ्यता ने हमारे देश की सभ्यता पर इस तरह से अपना प्रभाव डाला है, कि हम लोग उनके तौर तरीकों को अपनाते जा रहे हैं और वे लोग हमारे सभ्यता-संस्कृति को अपना रहे हैं। आए दिन आपको तीर्थ स्थलों में या मंदिरों में कई विदेशी लोग दिखाई देंगे जो भारतीय परम्परा व संस्कृति में अंतर्निहित सनातन धर्म को अपनाए हुए हैं। उनके प्रति उनका सम्मान और प्रेम अतुलनीय है।

आधुनिकतावाद का हमारे जीवन पर बहुत ही व्यापक प्रभाव पड़ा है। मोबाइल जैसी लाभकारी अविष्कार ने

संसार को बहुत फायदा भी पहुँचाया है, किंतु इसके अत्यधिक प्रयोग से हमारे मानसिक और शारीरिक पतन का भी रूप देखने को मिल रहा है। आज पृथ्वी का हर मानव मोबाइल को अपना परिवार मान बैठा है। मोबाइल के अंदर ही वह दोस्त बनाता है। और उन्हीं से दिन-रात बात करता है। जो उसके अपने सगे रिश्ते हैं उनका हाल-चाल वह कभी नहीं लेता है। आज रिश्तों के टूटने का कारण आजकल मोबाइल भी बन गया है। इस मोबाइल के अत्यधिक प्रयोग ने कई जिंदगियां खराब कर दी है। पति-पत्नी जैसे प्रेम वाले रिश्ते टूटने का कारण भी मोबाइल है। मोबाइल के अंदर विद्यमान सोशल मीडिया ही इन सब चीजों का जिम्मेवार है। हम सोशल मीडिया पर दिन रात अपना सुध-बुध खो बैठे हैं। आज रियल जिंदगी रिल बन गई है। जिसको देखो रिल बनाने में व्यस्त है। इस रिल ने उम्र का भी लिहाज नहीं किया।

हालांकि सोशल मीडिया आजकल कमाई का एक जरिया भी बन चुका है। किन्तु इसे हमें अत्यधिक प्रयोग से बचने की आवश्यकता है। इस मोबाइल ने हमारे संस्कार और सभ्यता पर गहरा असर किया है। आज हम 5जी नेटवर्क का इस्तेमाल कर रहे हैं किंतु हमारी जो आपसी प्रेम और सौहार्द है वह -5एच (एच-इतिहास) में चला गया है।

मानव सभ्यता का विकास आवश्यक है, किन्तु वह विकास जो हमें पतन की तरफ ले जाए। ऐसे विकास की गति को समझने की आवश्यकता है। यदि पृथ्वी पर मानव सभ्यता ही ना रहे तो इन विकास का क्या महत्व है?

आज हमने नदियों, समुद्रों, हवा, पानी, पृथ्वी, जंगल सभी को अपूर्ण क्षति पहुंचाई है। जिससे तापमान में गिरावट एवं बढ़ोतरी भी नजर आ रही है। पूरी पारिस्थितिक-तंत्र गड़बड़ हो गया है।

यह कहना सही है कि हमने मानव सभ्यता के विकास के साथ तरक्की तो बहुत की है, किंतु हमने अपनी सभ्यता व संस्कृति को खो दिया, साथ-साथ हम पर्यावरण को भी खोते जा रहे हैं। अगर इस पर विचार नहीं किया गया तो आने वाले समय में मानव संकट उत्पन्न हो जाएगा जिसमें मानव, मानव ना रह कर राक्षस बन जाएगा। क्योंकि बिना प्रेम और संवेदना के तो मानव राक्षस ही होते हैं। जिनमें ना तो पर्यावरण चिंता होती है ना अपने सभ्यता व संस्कृति की।

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।

- महावीर प्रसाद द्विवेदी

अशिक्षित रहने से पैदा न होना अच्छा है, क्योंकि अज्ञान सब बुराइयों का मूल है।

- नेपोलियन बोनापार्ट

समय का मूल्य

ज्ञान देवी नेगी
तकनीशियन-III
कार्यालय-सिनियर डी ई जी

आज मैं आपको एक कहानी सुनाने जा रही हूँ- दो सहेलियों की, सीमा और रीना की। सीमा और रीना दोनों ही अच्छी सहेलियाँ थी लेकिन उनके समय को देखने का तरीका बिल्कुल भिन्न था। सीमा हमेशा समय की इज्जत करती थी, वह अपने सभी कार्य समय पर करती और हमेशा प्लान बनाकर चलती थी, दूसरी तरफ रीना जो अक्सर समय को फालतू में गवां देती और हमेशा चीजों को लास्ट समय तक करने के लिए छोड़ देती थी।

एक दिन उनके गाँव में एक बहुत बड़ा मेला लगा। दोनों ने मेले में जाने के लिए योजना बनाई। सीमा ने अपना सभी कार्य एक दिन पहले ही समाप्त कर लिए, ताकि वह मेले का पूरा मजा उठा सके। रीना ने भी वादा किया कि वह समय पर आएगी। मेले के दिन सीमा सुबह जल्दी उठ गई और तैयार होकर मेले के लिए निकल पड़ी, रीना ने अपनी आदत से मजबूर आखिरी समय तक सोना जारी रखा और जब वह मेले के लिए निकली, तो काफी देर हो चुकी थी।

मेले में सीमा ने हर खेल का मजा उठा लिया, हर प्रोग्राम को देखी और बहुत सारी मिठाईयाँ और खिलौने खरीदे जब रीना मेले में पहुंची तो उसने देखा कि अधिकतर प्रोग्राम बंद हो चुके थे और खेलों का समय भी खत्म हो गया था वह बहुत उदास हुई और उसे अपने समय की बर्बादी का अनुभव हुआ। इस समय के नुकसान के बाद रीना ने सीमा से समय के लाभ को समझने में मदद मांगी, सीमा ने उसे बताया कि समय एक बार चला जाए तो वापस नहीं आता। उसे यह भी समझाया कि समय के सही पालन और संचालन से वह अपने जीवन में बहुत कुछ हासिल कर सकती है।

रीना ने इसे अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण शिक्षा माना और वादा किया कि वह भविष्य में समय का महत्त्व करेगी, उसने योजना बनाना और अपने समय का ठीक उपयोग करना शुरू कर दिया।

इस कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है! हमें यह जानना चाहिए कि समय बहुत बहुमूल्य है और हमें समय का ठीक इस्तेमाल करना चाहिए चाहे वह अध्ययन हो, खेल हो या फिर कोई अन्य कार्य, समय की बेहतर योजना और संचालन से हम अपनी जीविका को और भी सर्वोत्तम बना सकते हैं।

हम सभी समय की इज्जत करें और इसे समझदारी से प्रयोग करें। समय का सदुपयोग हमारे जीवन को निखार सकता है।

जो अपने कर्मों को ईश्वर का कर्म समझकर करता है वही ईश्वर का अवतार है। - जयशंकर प्रसाद

रेलवे की भूमिका

अनुराग कुमार
कनिष्ठ लिपिक सह टंकक
इंजीनियरी विभाग, पूर्व रेलवे, हावड़ा

भारतीय रेल, देश की एक महत्वपूर्ण परिवहन प्रणाली है, जो न केवल यात्रियों को बल्कि माल की ढुलाई के लिए भी आवश्यक है। यह सस्ता, सुरक्षित और सुविधाजनक यात्रा का माध्यम है। रेलवे नेटवर्क की विशेषता यह है कि यह देश के कोने-कोने में फैला हुआ है, जो विभिन्न राज्यों और शहरों को जोड़ता है।

रेलवे की शुरुआत 1853 में हुई थी और तब से यह देश के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह न केवल यात्रियों की भीड़ को संभालता है, बल्कि कृषि, उद्योग और व्यापार के लिए भी आवश्यक सामग्री की आपूर्ति करता है। रेलवे द्वारा सामान की ढुलाई की लागत अन्य साधनों की तुलना में काफी कम होती है, जिससे व्यापारी और किसान अपने उत्पादों को आसानी से बाजारों तक पहुंचा सकते हैं।

भारतीय रेलवे की संरचना में कई ट्रेनें, जैसे मेल, एक्सप्रेस और स्थानीय ट्रेनें शामिल हैं। ये ट्रेनें यात्रियों की सुविधाओं के अनुसार विभिन्न श्रेणियों में चलती हैं, जैसे एसी (वातानुकुलित), स्लीपर और सामान्य श्रेणी। रेलवे की यह विविधता यात्रियों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार यात्रा करने का विकल्प देती है।

इसके अलावा, रेलवे ने कई तकनीकी नवाचारों को अपनाया है, जैसे उच्च गति रेल, स्वचालित सिग्नलिंग प्रणाली, और ई-टिकटिंग। इन सुविधाओं के माध्यम से यात्रियों का अनुभव और अधिक बेहतर हुआ है। रेलवे के पास एक विशाल कर्मचारी वर्ग है, जो इसे सुचारू रूप से चलाने में मदद करता है।

हालांकि, भारतीय रेलवे के सामने कई चुनौतियाँ भी हैं, जैसे कि भीड़भाड़, पुराने इंफ्रास्ट्रक्चर और वित्तीय समस्याएँ। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए सरकार ने कई योजनाएँ बनाई हैं, जैसे कि बुलेट ट्रेनों का निर्माण और स्टेशन का पुनर्विकास।

अंत में, भारतीय रेलवे केवल एक परिवहन साधन नहीं है, बल्कि यह देश की आर्थिक और सामाजिक धारा को जोड़ने वाला एक महत्वपूर्ण अंग है। इसका विकास और आधुनिकीकरण न केवल यात्रियों के लिए बल्कि पूरे देश के लिए आवश्यक है। रेलवे की भूमिका आने वाले समय में और भी महत्वपूर्ण होगी, क्योंकि यह सभी के लिए एक सुलभ और विश्वसनीय यात्रा का माध्यम बनेगा।

राजभाषा विषय पर विभागीय परीक्षा-उपयोगी प्रश्नोत्तर
Questions and Answers on Rajbhasha for Departmental Examinations

1. हिंदी में कार्यालयीन काम करने के लिए रेलवे बोर्ड द्वारा लागू की गई योजना क्या है?
   What is the scheme implemented by Railway Board for doing work in Hindi?
   राजभाषा व्यक्तिगत नकद पुरस्कार योजना/ Rajbhasha individual Cash Award Scheme
2. राजभाषा विभाग के राभाकास से क्या मतलब है?
   What is the expansion fo OLIC used by Dept. of Official Language?
   राजभाषा कार्यान्वयन समिति/Official Language Implementation Committee?
3. केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए कितने हिंदी पाठ्यक्रम निर्धारित हैं?
   How many Hindi courses are prescribed for Central Govt. employees?
   तीन/Three
4. केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए निर्धारित प्रारंभिक पाठ्यक्रम क्या है?
   Which is the elementary Hindi course prescribed for Central Govt. employees?
   प्रबोध/Prabodh
5. रेलवे बजट का हिंदी अनुवाद सबसे पहले कब तैयार हुआ था तथा उस समय रेल मंत्री कौन थे?
   In which year the Hindi translation of Railway Budget was prepared first and who was the Railway Minister?
   वर्ष 1956 में, स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री जी
   In the year 1956, Late Lal Bahadur Shastri.
6. रेलवे बोर्ड में हिंदी (संसद) अनुभाग का गठन कब हुआ था?
   In which year Hindi (Parliament) section was established in Railway Board?
   वर्ष 1960 में/ In the year 1960.
7. "क" क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले राज्य कौन-कौन से हैं?
   What are all the States that come under Region "A"?
   बिहार, झारखंड, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, दिल्ली और अंडमान व निकोबार द्वीप समूह संघ राज्य क्षेत्र।
   Bihar, Jharkhand, Delhi, Haryana, Himachal Pradesh, Madhya Pradesh, Chattisgarh, Rajasthan, Uttar Pradesh, Uttranchal, Delhi & Andaman Nicobar Island group.
8. "ग" क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले राज्य कौन-कौन से हैं?
   What are all the States that come under Region "C"?
   "क" और "ख" क्षेत्र में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत हैं। तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, गोवा, जम्मू व कश्मीर, असम, नागालैंड, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, त्रिपुरा, मिजोरम, मणिपुर तथा पांडिचेरी संघ राज्य क्षेत्र।
   Region "C" means the States and Union Territories other than those referred to in Region A & B, Tamilnadu, Kerala, Karnataka, Andhra Pradesh, Telangana, Orissa, West Bengal, Goa, Jammu & Kashmir, Assam, Nagaland, Meghalaya, Arunachal Pradesh, Sikkim, Tripura, Mizoram, Manipur and Union Territory of Pondicherry.
9. रेल मंत्रालय का निरीक्षण संसदीय राजभाषा समिति की कौन-सी उप समिति करती है?
   Which Sub-Committee of the Committee of Parliament of Official Language inspects Railway Ministry?
   दुसरी उप समिति/ Second Sub-Committee
10. केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए निर्धारित हिंदी पाठ्यक्रम क्या-क्या हैं ?
    What are the Hindi courses prescribed for Central Govt. employees?
    प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ
    Prabodh, Praveen & Pragya
11. केंद्र सरकार के लिपिकीय कर्मचारियों के लिये निर्धारित अंतिम पाठ्यक्रम क्या है?
    Which is the final Hindi course prescribed for Clerical cadre employees of Central Govt.?
    प्राज्ञ/Pragya
12. साल में कितनी बार नियमित पाठ्यक्रम की हिंदी परीक्षाएं चलाई जाती हैं?
    How many times are the Regular Hindi examinations conducted in a year?
    दो बार/2 times

13. हिंदी पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षित होने के लिए केंद्र सरकार के कर्मचारियों को कौन-सी प्रशिक्षण सुविधाएं उपलब्ध हैं ?

What are all the training facilities available to a Central Govt employee to get trained in the Hindi Courses?

नियमित, गहन, पत्राचार एवं प्राइवेट

Regular, Intensive, Correspon-dence and Private

14. नाम, पदनाम, साइन बोर्ड को किस क्रम में प्रदर्शित किया जाना है ?

In which order Name, Designation and Sign Boards are to be exhibited ?

1. प्रादेशिक भाषा 2. हिंदी 3. अंग्रेजी

1. Regional Language 2. Hindi 3. English

15. आम जनता द्वारा प्रयोग किए जाने वाले फार्मों को किस क्रम में तैयार किया जाना है ?

In which order forms used by Public are to be prepared?

त्रिभाषी (प्रादेशिक, हिंदी व अंग्रेजी)

Trilingual from (1. Regional Language 2. Hindi 3. English)

16. रबड़ मुहरों को किस प्रकार तैयार किया जाना है ?

In which order Rubber Stamps are to prepared?

हिंदी-अंग्रेजी द्विभाषी रूप में - एक लाइन हिंदी एक लाइन अंग्रेजी

Hindi-English Bilingual form-one line Hindi and one line English.

17. हिंदी टंकण निजी तौर से उत्तीर्ण करने पर मिलने वाली एकमुश्त राशि क्या है ?

What is the lumpsum award for passing Hindi Typewriting Examination by private study?

रु./Rs. 1600/-

18. संविधान की आठवीं अनुसूची संबंधी प्रावधान उपलब्ध अनुच्छेद का नाम बताइए ?

Name the article in which the provision of the Eighth Schedule of the constitution is available?

अनुच्छेद 344(1) & 351, Article-344 (1) &351

19. राजभाषा अधिनियम 1963 क्यों पारित था ?

Why was the OL Act 1963 passed?

1965 के बाद भी हिंदी के साथ अंग्रेजी के प्रयोग को जारी रखने का प्रावधान करने के लिए।

To entact the provision the use of English along with Hindi even after 1965.

20. संविधान के भाग- V में राजभाषा नीति संबंधित उपबंध किस अनुच्छेद में हैं ?

In which article is the provision regarding OL policy available in Part V of the constitution?

अनुच्छेद 120/ Article-120

21. हिंदी वार्तालाप पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण पाने के लिए कौन-कौन योग्य हैं ?

Who are eligible to undergo training in Hindi conversation course?

चालू लाइन के सभी कर्मचारी जो आम जनता से सीधे संपर्क करते हैं। (वर्ग IV के कर्मचारी सहित)

All the open line staff (including Class-IV) who come in contact with public directly.

22. केंद्र सरकार के अधिकारी/कर्मचारी को क्यों हिंदी प्रशिक्षण दिया जाता है ?

Why training in Hindi is imparted to Central Government officers/Employees?

ताकि वे हिंदी में अपना दैनंदिन काम करें/By which they can do their day-to-day work in Hindi.

23. हिंदी वार्तालाप पाठ्यक्रम की अवधि क्या है ?

What is the duration for Hindi conversation course?

30 घंटे/30 Hrs.

24. प्राज्ञ पास करने पर मिलने वाला एकमुश्त पुरस्कार क्या है ?

What is the lumpsum Award for passing Pragya?

रु./Rs. 2400/-

25. अष्टम अनुसूची में शामिल विदेशी भाषा क्या है ?

What is the Foreign Language included in the Eighth Schedule?

नेपाली/Nepali

26. मंडल रेल कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष कौन हैं ?

Who is the Chairman of the Divl. Official Language Implementation Committee?

मंडल रेल प्रबंधक/Divisional Railway Manager.

27. गाड़ियों के पैनल बोर्ड को किस प्रकार प्रदर्शित किया जाना है ?

How the panel Board of a train has to be displayed?

त्रिभाषी (प्रादेशिक, हिंदी व अंग्रेजी)/In trilingual (Regional, Hindi & English)

भारतीय रेल की हिंदी प्रोत्साहन एवं पुरस्कार योजनाएं

(1) हिंदी परीक्षाएं - हिंदी प्रशिक्षण के लिए प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ पाठ्यक्रम है। इन पाठ्यक्रमों की अवधि 55 महिनों की है। वे पाठ्यक्रम पूर्णकालिक हैं और इन्हें नियत कार्य दिवसों में पूरा किया जाता है। पाठ्यक्रम की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दिए जाते हैं तथा विशेष योग्यता के साथ परीक्षा उत्तीर्ण करने पर निम्नलिखित राशि प्रदान की जाती है -

	प्रबोध	प्रवीण	प्राज्ञ
70% से अधिक अंक प्राप्त करने पर	1600/- रुपए	1800/- रुपए	2400/- रुपए
60% से 69% तक अंक प्राप्त करने पर	800/- रुपए	1200/- रुपए	1600/- रुपए
55% से 59% तक अंक प्राप्त करने पर	400/- रुपए	600/- रुपए	800/- रुपए

हिंदी परीक्षाएं पास करने पर नियमानुसार एक वर्ष हेतु वैयक्तिक वेतन भी दिया जाता है ।

2) निजी प्रयत्नों से हिंदी परीक्षा पास करने पर कर्मचारियों को एकमुश्त पुरस्कार

प्रबोध	1600/- रुपए
प्राज्ञ	2400/- रुपए
प्रवीण	1500/- रुपए
हिंदी टंकण परीक्षा	1600/- रुपए
हिंदी आशुलिपि	3000/- रुपए

(3) हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि परीक्षा विशेष योग्यता से पास करने पर नकद पुरस्कार

हिंदी टंकण/आशुलिपि के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्देश्य कर्मचारियों को हिंदी टंकण और हिंदी आशुलिपि में कौशलता प्रदान करना है ताकि वे हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं के टंकण और आशुलिपि में दक्षता प्राप्त कर सकें। सफल प्रशिक्षार्थियों को प्रमाणपत्र प्रदान किए जाते हैं तथा विशेष योग्यता के साथ परीक्षा उत्तीर्ण करने पर निम्नलिखित राशि प्रदान की जाती है -

हिंदी टंकण	पुरस्कार राशि
90% से 94% तक अंक प्राप्त करने पर	800/- रुपए
95% से 96% तक अंक प्राप्त करने पर	1600/- रुपए
97% या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	2400/- रुपए
हिंदी आशुलिपि	पुरस्कार राशि
88% से 91% तक अंक प्राप्त करने पर	800/- रुपए
92% से 94% तक अंक प्राप्त करने पर	1600/- रुपए
95% या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	2400/- रुपए

4. हिंदी टाइपिंग/हिंदी आशुलिपि परीक्षा निजी तौर पर पास करने पर एकमुश्त पुरस्कार

हिंदी में सरकारी काम करने के लिए अंग्रेजी टाइपिस्टों/आशुलिपिकों को परीक्षा निजी तौर पर पास करने पर एकमुश्त पुरस्कार दिए जाने की योजना है, जो कि निम्नलिखित है -

हिंदी टाइपिंग के लिए	800/- रुपए
हिंदी आशुलिपि के लिए	1500/- रुपए

नोट - इसके लिए टाइपिस्टों तथा हिंदी भाषा आशुलिपिकों को 12 माह के लिए एक वैयक्तिक वेतनवृद्धि के बराबर की राशि का लाभ तथा हिंदीतर भाषा आशुलिपिकों को दो वेतनवृद्धि के बराबर की राशि का लाभ।

5. आशुलिपिकों/टाइपिस्टों को देय प्रोत्साहन भत्ता

अंग्रेजी के अतिरिक्त हिंदी टाइपिंग/हिंदी आशुलिपि का कार्य करने वाले अंग्रेजी टंकक/आशुलिपिकों को क्रमशः 160/- रुपए तथा 240/- रुपए हिंदी प्रोत्साहन भत्ता प्रतिमाह की दर से दिया जाता है।

6. हिंदी में डिक्टेशन देने वाले अधिकारियों को देय पुरस्कार

इस योजना के अंतर्गत हिंदी में डिक्टेशन देने वाले एक हिंदी भाषी और एक हिंदीतर भाषी रेल अधिकारी को प्रतिवर्ष निम्नानुसार नकद पुरस्कार दिए जाते हैं।

हिंदी डिक्टेशन पुरस्कार	शब्द सीमा	राशि
क एवं ख क्षेत्र	20,000	5000/- रुपए
ग क्षेत्र	10,000	5000/- रुपए

7. रेल मंत्री हिंदी निबंध प्रतियोगिता - इस योजना का उद्देश्य रेल कर्मचारियों को रेल संचालन और प्रबंधन संबंधी विषयों पर निबंध लेखन के प्रति प्रेरित करना है। निबंध 2500 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए। योजना के अंतर्गत राजपत्रित अधिकारियों और अराजपत्रित कर्मचारियों के लिए अलग-अलग निम्नलिखित पुरस्कार निर्धारित है -

प्रथम पुरस्कार 6000/ रुपए (राजपत्रित तथा अराजपत्रित के लिए एक-एक)

द्वितीय पुरस्कार 4000/- रुपए (राजपत्रित तथा अराजपत्रित के लिए एक-एक)

8. मूल रूप से हिंदी टिप्पण एवं प्रारुप लेखन पुरस्कार योजना - सरकारी कामकाज में वर्ष के दौरान 20 हजार या अधिक शब्द हिंदी में लिखने वाले कर्मचारी इस योजना में भाग लेने के पात्र हैं और प्रत्येक विभाग/यूनिट को दस पुरस्कार दिए जा सकते हैं -

प्रथम पुरस्कार (दो)	5000/- रुपए (प्रत्येक)
द्वितीय पुरस्कार (तीन)	3000/- रुपए (प्रत्येक)
तृतीय पुरस्कार (पांच)	2000/- रुपए (प्रत्येक)

9. रेल मंत्री राजभाषा रजत पदक - हिंदी के प्रयोग-प्रसार में प्रशंसनीय योगदान के लिए रेलों/उत्पादनों के वरिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड-(SAG) एवं उससे उच्च अधिकारियों के लिए (रु. 8000/- तथा प्रशस्ति पत्र) कुल 30 ।

10. विभागों में हिंदी के सर्वाधिक प्रयोग के लिए सामूहिक पुरस्कार योजना

प्रथम पुरस्कार रु. 12000/- मुख्यालय में हिंदी का सर्वाधिक प्रयोग करने वाले विभाग के कुल 6 कर्मचारियों के बीच उक्त राशि का वितरण किया जाता है।

द्वितीय पुरस्कार रु. 8000/- संबंधित रेलवे के मंडलों में से हिंदी का सर्वाधिक प्रयोग करने वाली शाखा के कुल 5 कर्मचारियों के बीच उक्त राशि का वितरण किया जाता है।

तृतीय पुरस्कार रु. 6000/- संबंधित रेलवे के कारखानों में हिंदी का सर्वाधिक प्रयोग करने वाली कुल 6 कर्मचारियों के बीच उक्त राशि का वितरण किया जाता है।

11. हिंदी निबंध, टिप्पण एवं प्रारुप लेखन और वाक् प्रतियोगिताएं - रेल कार्यालयों में राजभाषा प्रयोग-प्रसार बढ़ाने के लिए अखिल भारतीय तथा क्षेत्रीय स्तर पर प्रतिवर्ष विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। इसमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा सांत्वना पुरस्कार प्राप्त करनेवाले अधिकारियों/कर्मचारियों को निम्नलिखित राशि प्रदान की जाती है -

	अखिल भारतीय स्तर पर	क्षेत्रीय स्तर पर	मंडल स्तर पर
प्रथम पुरस्कार	5000/- रुपए	3000/- रुपए	1000/- रुपए
द्वितीय पुरस्कार	4000/- रुपए	2500/- रुपए	800/- रुपए
तृतीय पुरस्कार	3000/- रुपए	2000/- रुपए	600/- रुपए
प्रेरणा पुरस्कार	2500/- रुपए (पाँच)	1500/- रुपए (तीन)	400/- रुपए (तीन)

12. रेल मंत्री राजभाषा शील्ड/ट्रॉफी पुरस्कार योजना - इस योजना के तहत रेल मंत्रालय द्वारा 'क', 'ख' तथा 'ग' क्षेत्र में स्थित प्रधान कार्यालयों/मंडलों तथा उत्पादन कारखानों को राजभाषा में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने हेतु अलग-अलग शील्ड, ट्रॉफी तथा चल वैजयंती प्रदान की जाती है। चुने गए सर्वश्रेष्ठ आदर्श स्टेशन/कारखाना को शील्ड के साथ-साथ 7000/-, 7000/- रुपए की नकद राशि भी प्रदान की जाती है, जिसे कर्मचारियों और अधिकारियों के बीच समान रूप से वितरित किया जाता है।

13. महाप्रबंधक राजभाषा व्यक्तिगत पुरस्कार - इस योजना के अंतर्गत प्रतिवर्ष हिंदी में प्रशंसनीय कार्य करनेवाले रेल कर्मियों को पुरस्कृत किया जाता है और देय पुरस्कार राशि प्रदान की जाती है ।

14. मंडल रेल प्रबंधक राजभाषा व्यक्तिगत पुरस्कार - इस योजना के अंतर्गत प्रतिवर्ष हिंदी में प्रशंसनीय कार्य करनेवाले रेल कर्मियों को पुरस्कृत किया जाता है और देय पुरस्कार राशि प्रदान की जाती है।

15. रेलवे बोर्ड की व्यक्तिगत नकद पुरस्कार - इस योजना के अंतर्गत प्रतिवर्ष सरकारी कामकाज में हिंदी में अधिकाधिक एवं प्रशंसनीय कार्य करनेवाले कनिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड तक के अधिकारी तथा अराजपत्रित कर्मचारियों को पुरस्कृत किया जाता है और निम्नलिखित राशि प्रदान की जाती है -

पुरस्कार राशि 3000/- रुपए प्रत्येक को।

16. लाल बहादुर शास्त्री तकनीकी मौलिक पुस्तक लेखन योजना - तकनीकी रेल विषयों पर हिंदी में मौलिक पुस्तकें लिखने के लिए रेलों से संबंधित तकनीकी विषयों पर मूल रूप से हिंदी में पुस्तकें लिखने वाले प्रतिभावान रेल कर्मियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से रेलवे बोर्ड ने यह योजना लागू की है। पुस्तक मौलिक रचना होनी चाहिए। पुस्तक का विषय रेल संचालन या रेल प्रबंध से संबंधित होना चाहिए। पुस्तक सामान्यत: 100 पृष्ठ से कम नहीं होनी चाहिए। जिन पुस्तकों को इस पुरस्कार योजना के लिए पहले प्रस्तुत किया जा चुका है, उन्हें दोबारा प्रस्तुत नहीं किया जाए। इस योजना के अंतर्गत निम्नलिखित राशि प्रदान की जाती है।

प्रथम पुरस्कार	(एक)	15,000/- रुपए
द्वितीय पुरस्कार	(एक)	7,000/- रुपए
तृतीय पुरस्कार	(एक)	3,300/- रुपए

17. प्रेमचन्द कथा/कहानी/उपन्यास लेखन पुरस्कार योजना - रेल कर्मियों की साहित्यिक प्रतिभा और अभिरुचि को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से रेल मंत्रालय में कथा संग्रह/उपन्यास और कहानी पुस्तक लेखन पर प्रेमचन्द

पुरस्कार योजना चला रखी है। पुस्तक लेखक की मौलिक कृति होनी चाहिए और पहले कहीं से पुरस्कृत न हो। किसी अन्य भाषा से ली गई अनूदित अथवा सम्पादित पुस्तकों पर विचार नहीं किया जाएगा। इस योजना के अंतर्गत एक लेखक को लगातार दो वर्ष तक पुरस्कृत नहीं किया जाएगा।

प्रथम पुरस्कार	(एक) 20,000/- रुपए
द्वितीय पुरस्कार	(एक) 10,000/- रुपए
तृतीय पुरस्कार	(एक) 7000/- रुपए

18. मैथिलीशरण गुप्त काव्य पुस्तक लेखन पुरस्कार योजना - इस योजना के अंतर्गत सर्वश्रेष्ठ काव्य संग्रह के लिए पुरस्कृत प्रदान किया जाता है। पुस्तक लेखक की मौलिक कृति होनी कम से कम 100 पृष्ठों की होनी चाहिए और पहले कहीं से पुरस्कृत न हो। किसी अन्य भाषा से ली गई अनूदित अथवा सम्पादित पुस्तकों पर विचार नहीं किया जाएगा। इस योजना के अंतर्गत एक लेखक को लगातार दो वर्ष तक पुरस्कृत नहीं किया जाएगा।

प्रथम पुरस्कार	(एक) 20,000/- रुपए
द्वितीय पुरस्कार	(एक) 10,000/- रुपए
तृतीय पुरस्कार	(एक) 7000/- रुपए

19. रेल मंत्री हिंदी निबंध लेखन प्रोत्साहन योजना- रेलवे बोर्ड कार्यालय द्वारा दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर, न्यूनतम 2000 शब्दों और अधिकतम 2500 शब्दों में, निबंध लिखकर रेलवे बोर्ड कार्यालय को भेजना होता है। इस प्रतियोगिता के पुरस्कार 'राष्ट्रीय रेल पुरस्कार समारोह' के अवसर पर दिए जाते हैं।

राजपत्रित वर्ग के लिए

प्रथम पुरस्कार	6000/- रु.	द्वितीय पुरस्कार	4,000/- रु.

अराजपत्रित वर्ग के लिए

प्रथम पुरस्कार	6000/- रु.	द्वितीय पुरस्कार	4,000/- रु.

20. रेल यात्रा वृत्तांत पुरस्कार योजना - आम लोगों और रेल कर्मियों के रेल यात्राओं संबंधी अनुभव के आधार पर प्रत्येक कलेंडर वर्ष में पाए गए सर्वोत्तम यात्रा वृत्तांत के लिए न्यूनतम 3000 और अधिकतम 3500 शब्दों में लिखना होता है तथा निम्नानुसार नकद पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं -

प्रथम पुरस्कार	(एक) 4,000/- रुपए
द्वितीय पुरस्कार	(एक) 3,000/- रुपए
तृतीय पुरस्कार	(एक) 2,000/- रुपए

21. अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव - राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग को बढ़ाने के लिए रेल मंत्रालय द्वारा प्रत्येक वर्ष अखिल रेल स्तर पर हिंदी नाट्योत्सव का आयोजन किया जाता है। इस नाट्योत्सव में भाग लेने वाले रेल कर्मियों को स्मृति चिन्ह, प्रमाणपत्र एवं नकद पुरस्कार राशि प्रदान करके सम्मानित किया जाता है।

22. पत्रिका में प्रकाशित लेखों आदि के लिए पुरस्कार - रेलों द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं एवं पुस्तिकाओं में प्रकाशित लेखों, निबंध, कहानी एवं रचनाओं के लिए मानदेय के रूप में नकद राशि प्रदान करने के प्रावधान हैं।

मानदेय की राशि निम्नानुसार है :

(क) कहानी/लेख/नाटक	रु. 1000/-
(ख) कविता/पुस्तक समीक्षा	रु. 400/-
(ग) कार्टून/चित्र	रु. 300/-

23. हावड़ा मंडल में स्थानीय स्तर पर सक्षम प्राधिकारी द्वारा लागू प्रतियोगिताओं द्वारा पुरस्कार - योजना :

(क) अधिकारियों के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता (ऑन लाइन)

प्रथम पुरस्कार	रु. 1000/-
द्वितीय पुरस्कार	रु. 800/-
तृतीय पुरस्कार	रु. 600/-

(ख) कर्मचारियों के लिए निबंध प्रतियोगिता (मंडल कार्यालय सहित स्टेशनों तथा शेडों पर)

प्रथम पुरस्कार	रु. 800/-
द्वितीय पुरस्कार	रु. 600/-
तृतीय पुरस्कार	रु. 400/-

(ग) कर्मचारियों के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता प्रत्येक माह में (प्रश्नावली शब्दार्थ पर आधारित)

प्रथम पुरस्कार	रु. 800/-
द्वितीय पुरस्कार	रु. 600/-
तृतीय पुरस्कार	रु. 400/-

''मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि हिंदी के बिना हमारा काम नहीं चल सकता।''

- बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय

" निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।"

- भारतेंदु हरिश्चंद्र

''सरलता से शीघ्र सीखी जाने योग्य भाषाओं में हिंदी सर्वोपरि है।''

- महर्षि अरविंद

फाइलों पर टिप्पणी में काम आने वाले वाक्यांश

In excess of	-से आधिक
In exercise of	के प्रयोग मे
In favour of	1. -के पक्ष मे, 2. / -के नाम मे
In force	लागू / प्रवृत्त
In general	सामान्य रूप में/ आम तौर पर
In his discretion	स्वविवेक से / अपनी समझ से
In keeping with	-के अनुरूप
In lieu of	-के बदले में
In like manner	समान रीति से / उसी ढंग से
In lump sum	एकमुश्त / एक बार में
In matter of	के विषय मे
In modification of	-का आशोधन करते हुए -में तरमीम करते हुए
In official capacity	पद की हैसियत से
In operation	अमल में
In order	1. यथाक्रम/व्यवस्थित/क्रम से/ 2. संगत
In order of preference	अधिमान्यता के क्रम से
In order of priority	प्राथमिकता के क्रम से/अग्रता के क्रम से
In order to	-के लिए
In other respects	अन्य बातों में
In part	अंशतः
In particular	विशेषतः/खासकर
In perpetuity	शाश्वततः /सदैव के लिए
In person	स्वयं
In personal capacity	वैयक्तिक हैसियत से
In place of	-के स्थान में/ -के स्थान पर
In practice	व्यवहार में
In preference to	-की अपेक्षा
In presence of	-के समक्ष / -के सामने
In prosecution of	-के चलाने में/ -की पूर्ति करने में
In public interest	लोकहित में / लोकहित की दृष्टि में
In pursuance of	-के अनुसरण में/ -के अनुसार
In regard to	-के विषय में/-के बारे में
In reply to	-के उत्तर में
In respect of	-के लिए/- के विषय में

In so far as	जहां तक कि
In supersession of	-का अधिक्रमण करते हुए
In support of	-के समर्थन में/-की पुष्टि में
In that behalf	उस विषय में / उस संबंध में उस प्रयोजन के लिए
In that respect	तद् विषयक / उस बारे में
In the aggregate	कुल मिलाकर
In the case of	-की स्थिति में/ -के विषय में
In the circumstances of	-की परिस्थितियों में
In the course of	-के दौरान
In the event of	-के होने पर/ -की अवस्था में
In the first instance	प्रथमतः / पहले तो, -के हित में/ -के लिए,- को ध्यान में रखते हुए
In principle	सिद्धांत रूप में
In the presence of	-के समक्ष/-के सामने / की उपस्थिति में
In the prescribed manner	विहित रीति से / निर्धारित ढंग से / निर्धारित रीति से
In the same way	उसी भांति / उसी तरह
In this behalf	इस संबंध में / इस विषय में/ इसके लिए
In time	समय पर समय से
In toto	पूर्णतः / पूरी तरह
In view of	को ध्यान में रखते हुए
Incumbent upon to be	के लिए लाजिम होना
Initiate, action, to	कार्यवाही आरंभ करना
Initiative, to take	सूत्रपात करना / पहल करना
Instance, in the first	प्रथमतः / पहले तो
Instance, in this	इस मामले में
Instance of, at the	-की प्रेरणा पर/ -के कहने से
Instructions are solicited	कृपया अनुदेश दें
Inter alia	और मामलों में /के साथ-साथ
Interference, undue	अनुचित हस्तक्षेप
Inter se	आपस में परस्पर
Intimation to us, under	हमें सूचना देते हुए
Involving question of policy	जिसमें नीति का प्रश्न (निहित) हो
Irrespective of fact	इस बात का विचार किए बिना
Is hereby informed	को एतद्द्वारा सूचित किया जाता है
It is requested	यह निवेदन है/ निवेदन है
It is suggested	बह सुझाव दिया जाता है /सुझाव है
It may further be added	यह भी बताया जाता है/ यह भी बताना उचित होगा / साथ ही
It will be construed	इसका यह अर्थ समझा जाएगा

दिनांक 20.09.2024 को आयोजित क्षेत्रीय रेल हिंदी नाट्योत्सव के दौरान हावड़ा मंडल द्वारा मंचित नाटक 'अपराधी कौन?' को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित

मंडल कार्यालय एवं विभिन्न स्टेशनों में आयोजित हिंदी कार्यशाला (2024-2025)

राजभाषा विभाग हावड़ा द्वारा आयोजित कुंजीयन प्रशिक्षण

हावड़ा मंडल में आयोजित हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण

हावड़ा मंडल में रेल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की झलकियाँ

मंडल रेल प्रबंधक के कर-कमलों द्वारा हिंदी पत्रिका 'सृजन' के 36वें अंक के विमोचन की झलकियाँ

देवांगिनी घोष
सुपुत्री-देवाशीष घोष, टीआई, हावड़ा

अंजना घोष
सीनियर टेक/टीआरडी
हावड़ा

राजभाषा पखवाड़ा के दौरान आयोजित चित्र देखो कहानी लिखो प्रतियोगिता एवं निबंध प्रतियोगिता का चित्र परिलक्षित है

राजभाषा विभाग/हावड़ा द्वारा आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता